रीवा

30 जुलाई 2025 बुधवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना एवं मनेन्द्रगाढ़ से एक साथ प्रकाशित

सुदर्शन तीसरे नंबर

@ पेज 7

हिमाचल में बादल फटा, घरों में घुसा मलबा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। देशभर में बारिश के कारण जन-जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। मौसम विभाग ने मंगलवार को हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, बिहार के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। एमपी में भोपाल 34 जिलों में भारी बारिश हो रही है। हिमाचल प्रदेश के मंडी में सोमवार देर रात बादल फटा। अब तक 3 लोगों की मौत हो गई और 2 लापता हैं। 15 से ज्यादा लोगों को रेस्क्यू किया गया। चंडीगढ़-मनाली और मंडी-जोगेंद्रनगर फोरलेन बंद हो गया है। भूस्खलन और पानी के तेज बहाव से कई घरों में मलबा घुस गया। राजस्थान में भारी बारिश से कई जिलों में बाढ़ जैसे हालात हो गए हैं। चित्तौड़गढ़, झालावाड़, कोटा, पाली और सिरोही में घरों तक में पानी घुस गया है। टोंक-चित्तौड़गढ़ में बारिश से हुए हादसों में दो लोगों की मौत हो गई। भीलवाड़ा के बिजौलिया इलाके में सड़कों पर नाव चल रही है। बाढ़ में फंसे लोगों को स्क्रक्ष की टीम रेस्क्यू कर रही है। आज राज्य के 27 जिलों में बारिश का अलर्ट है। इसके चलते 15 जिलों में स्कूलों की छुट्टी कर दी है।

ग्रैंड मुफ्ती बोले- निमिषा की मौत की सजा रद्द

नई दिल्ली, (एजेंसी)। यमन की जेल में बंद भारतीय नर्स निमिषा प्रिया की मौत की सजा पर संशय गहरा गया है। एक तरफ भारतीय ग्रैंड मुफ्ती कांथापुरम एपी अबूबकर मुसलियार के ऑफिस ने दावा किया है कि निमिषा प्रिया की पहले स्थगित की गई मौत की सजा को अब रद्द कर दिया गया है। वहीं, दूसरी तरफ विदेश मंत्रालय के सूत्रों ने निमिषा की सजा रद्द होने की जानकारी को भ्रामक बताया है। उन्होंने कहा कि ये जानकारियां मौजूदा स्थिति को सही ढंग से नहीं दर्शातीं। निमिषा प्रिया यमन में एक हत्या के मामले में मौत की सजा का सामना कर रहीं हैं। उसे जून 2018 में एक यमनी नागरिक की हत्या के लिए दोषी ठहराया गया था। इस मामले में उसे 16 जुलाई को मौत की सजा दी जानी थी। हालांकि, इससे पहले ही 15 जुलाई को निमिषा की सजा अस्थाई रूप से टाल दी गई थी।भारतीय ग्रैंड मुफ्ती कांथापुरम एपी अबूबकर मुसलियार और यमन के चर्चित सूफी विद्वान शेख हबीब उमर बिन हाफिज ने 15 जुलाई को इस मसले पर बातचीत की थी। इसमें यमन के सुप्रीम कोर्ट के एक जज और मृतक का भाई भी शामिल था। यमन के शेख हबीब को बातचीत के लिए मुफ्ती मुसलियार ने मनाया था। यह भी पहली बार था कि जब मृतक के परिवार का कोई करीबी सदस्य बातचीत को तैयार हुआ हो। यह बातचीत शरिया कानून के तहत हुई थी।

विधानसभा से पास बिल को राष्ट्रपति-राज्यपाल की मंजूरी कब तक

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को राष्ट्रपति के उस रेफरेंस पर सुनवाई की तारीखें तय कर दी, जिसमें पूछा गया है कि क्या राज्य विधानसभाओं से पारित विधेयकों पर राष्ट्रपति या राज्यपाल की सहमति के लिए कोई समयसीमा तय की जा सकती है। इस संवैधानिक मुद्दे पर 19 अगस्त से सुनवाई शुरू होगी। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई की अगुवाई वाली पांच जजों की बेंच ने केंद्र और सभी राज्यों को 12 अगस्त तक लिखित पक्ष जमा करने को कहा है।

बाघ सहित सभी वन्यजीवों के बेहतर संरक्षण और प्रबंधन का आदर्श केन्द्र बना मध्यप्रदेश : डॉ. मोहन यादव

भोपाल, (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को टाइगर स्टेट का गौरव प्राप्त है, हमारे राज्य में 9 टाइगर रिजर्व हैं। बाघ सहित सभी वन्यजीवों की संख्या निरंतर बढ़ रही है और इनके संरक्षण और उनके बेहतर प्रबंधन के आदर्श केन्द्र के रूप में मध्यप्रदेश की पहचान बनी है। वन्यजीव संरक्षण के लिए स्थानीय समुदाय की सहभागिता को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। राज्य सरकार के इन प्रयासों से पारिस्थितिकी तंत्र के मजबूत होने के साथ प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर भोपाल में 'अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस' के अवसर पर राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्वलित कर अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस के राज्य स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया और प्रदेशवासियों को नागपंचमी की बधाई दी। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वन्यजीवों के परिवहन के लिए तीन वन्यजीव वाहन, तीन वन्य जीव चिकित्सा वाहन और दो डॉग स्क्वायड रेस्क्यू वाहनों का लोकार्पण किया। उन्होंने वन्यजीव परिवहन के लिए वाहनों में उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी भी प्राप्त की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वनकर्मियों के अथक प्रयासों से प्रदेश में वन क्षेत्र समृद्ध हो रहा है

और वन्यजीवों की संख्या भी बढ़ रही है। मध्यप्रदेश बाघ और मनुष्य के एक साथ रहने के उदाहरण के रूप में उभर रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की दूरदर्शी सोच को क्रियान्वित करते हुए प्रदेश चीतों के पुनर्स्थापन में भी सफल रहा है। राज्य में रातापानी को आठवें टाइगर अभ्यारण्य का दर्जा मिला है। राज्य सरकार ने उज्जैन और जबलपुर में जू (चिड़ियाघर) और वन्यजीव रेस्क्यू सेंटर विकसित करने की योजना बनाई है। यह केवल पारंपरिक जू नहीं होंगे, बल्कि वन्यजीवों के संरक्षण एवं पुनर्वास के लिये समर्पित वन्यजीव रेस्क्यू सेंटर के रूप में विकसित किये जायेंगे।

एआई से जनरेट फर्जी फैसले कोर्ट में रखे जा रहे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस राजेश बिंदल ने कहा है कि भारत और अमेरिका में कुछ युवा वकील (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) टूल्स से कोर्ट के फर्जी फैसले खोज कर अदालत में पेश कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि कई बार युवा वकील एआई पर सिर्फ दो-तीन शब्द डालकर सर्च करते हैं और जो भी फैसला सामने आता है, उसे कोर्ट में दिखा देते हैं। कई बार वो फैसला गलत होता है, अल्पमत (मतभेद वाले जज का) होता है या फिर एआई ने खुद से कोई नया फर्जी जजमेंट बना दिया होता है।

मोदी बोले- दुनिया के किसी नेता ने जंग नहीं रुकवाई

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दुनिया में किसी भी देश ने भारत को अपनी सुरक्षा में कार्रवाई करने से रोका नहीं है। यूएन के 193 देशों में सिर्फ 3 देशों ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के समर्थन में बयान दिया। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प का नाम लिए बिना कहा- दुनिया के किसी भी नेता ने भारत से पाकिस्तान के खिलाफ एक्शन रोकने नहीं कहा था। पाकिस्तान

के डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ से हमला रोकने की गुहार लगाई थी। क्योंकि वो हमारा हमला नहीं झेल पा रहा था।

पीएम ने कहा- 9 मई की रात अमेरिका के उप राष्ट्रपति जी ने मुझसे बात करने का प्रयास किया, वो घंटे भर कोशिश कर रहे थे। मेरी सेना के साथ मीटिंग चल रही थी। बाद में मैंने उपराष्ट्रपति को फोन किया।

उन्होंने मुझसे कहा- पाकिस्तान बहुत बड़ा हमला करने वाला है। मेरा जवाब था- जिनको समझ नहीं आता उनको नहीं आएगा। अगर पाकिस्तान का ये इरादा है तो उसे बहुत महंगा पड़ेगा।

मोदी से पहले राहुल गांधी ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने 29 बार कहा है कि हमने युद्ध रुकवाया।

15 लोग बताइए, जो जिंदा, लेकिन लिस्ट से नाम कटा-सुप्रीम कोर्ट

पटना, (एजेंसी)। बिहार में हो रहे स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन को लेकर आज फिर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने कहा- अगर बड़े पैमाने पर वोटर्स के नाम कटे हैं तो हम हस्तक्षेप करेंगे। सुप्रीम कोर्ट 12 अगस्त से बिहार स्क्रक मामले की सुनवाई शुरू करेगा। एसआईआर को चुनौती देने वाले याचिकाकर्ताओं की तरफ से कोर्ट में कहा गया कि 65 लाख मतदाताओं के नाम काटे जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि इनमें से कुछ अपना घर छोड़कर कहीं और चले गए हैं, कुछ मर गए हैं। जस्टिस बागची ने कहा- हम इस पूरे मामले को देख रहे हैं। अगर बड़े पैमाने पर मतदाताओं का नाम वोटर लिस्ट से काटा जा रहा है, तो हम तुरंत हस्तक्षेप करेंगे। आप ऐसे 15 लोगों को लेकर आइए जो कहें कि वे जीवित हैं और उनको मरा दिखाकर नाम काट दिया गया है। सोमवार को कोर्ट ने ने एसआईआर पर रोक से इनकार कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने एडीआर से कहा था- अगर खामी मिली तो पूरी प्रक्रिया रद्द कर देंगे। इसके साथ ही चुनाव आयोग से पूछा है- आधार कार्ड, वोटर आईडी और राशन कार्ड को मतदाता पहचान के लिए स्वीकार क्यों नहीं किया जा रहा है। चुनाव आयोग ने कहा कि राशन कार्ड पर विचार नहीं किया जा सकता।

राजा रघुवंशी हत्याकांड पर फिल्म बनेगी

इंदौर, (एजेंसी)। इंदौर के बहुचर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड पर अब एक फिल्म बनने जा रही है। फिल्म को एस.पी. निंबावत डायरेक्ट करेंगे। मंगलवार दोपहर को निंबावत मुंबई से इंदौर पहुंचे और राजा के परिवार से मुलाकात की। कई फिल्में बना चुके एस.पी. निंबावत ने बताया कि इस फिल्म का नाम हनीमून इन शिलॉन्ग रखा गया है। मीडिया ने इस केस को इतना हाइलाइट किया कि पूरा बॉलीवुड इस केस के बारे में जानता है। मेरे अंधेरी (मुंबई) के ऑफिस में कई लोग हमसे मिलने भी आए। फिर हमने परिवार से संपर्क कर राइट्स के बारे में पूछा। परिवार ने किसी को राइट्स नहीं दिए थे। इस पर हमने परिवार से राइट्स लिए हैं। फिल्म डायरेक्टर एस.पी. निंबावत ने बताया कि मीडिया में लगातार आ रही खबरों से ही फिल्म बनाने का आइडिया आया। इसकी 80% शूटिंग इंदौर में और 20 फीसदी शूटिंग शिलॉन्ग में की जाएगी। फिल्म में राजा के बचपन से लेकर अबतक की पूरी कहानी बताएंगे। निंबावत के मुताबिक परिवार के लोगों को पूरी कहानी सुनाई, तब जाकर उन्होंने हां की है। बिना परिवार की सहमति के हम फिल्म नहीं बना सकते हैं। हमने ही अप्रोच किया था परिवार से। रजिस्ट्रेशन भी करा लिया है। राजा के भाई विपिन रघुवंशी ने कहा कि हमने एसपी निंबावत को फिल्म बनाने की अनुमति दी है। इस केस के कारण मेघालय की बदनामी हुई है।

ऑपरेशन सिंदूर पर बहस से थरूर और मनीष तिवारी दूर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी और शशि थरूर ऑपरेशन सिंदूर पर भारत का पक्ष रखने के लिए विदेश की यात्रा पर गए थे। इसके बाद उन्होंने पीएम मोदी से मुलाकात की थी।

संसद में चल रही ऑपरेशन सिंदूर पर पार्टी की ओर से न बोलने दिए जाने पर कांग्रेस नेता शशि थरूर के बाद मनीष तिवारी ने भी नाराजगी जाहिर की है। कांग्रेस सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री तिवारी ने सोमवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट में एक खबर का स्क्रीनशॉट साझा किया, इसमें बताया गया था कि थरूर और उन्हें क्यों बोलने नहीं दिया गया। तिवारी ने इसके साथ पूरब और पश्चिम फिल्म के देशभक्ति गीत की पंक्तियां लिखीं, भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं। जय हिंद!। वहीं, अपने ट्विट के बारे में पूछे जाने पर तिवारी ने मीडिया से कहा, इससे पहले कांग्रेस नेता शशि थरूर सोमवार को लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा में शामिल होने के सवाल को टाल गए थे। उन्होंने मीडिया से कहा, मौनव्रत... मौनव्रत। दरअसल, पहले खबर आ रही थी कि वे संसद की बहस में शामिल हो सकते हैं।

7 लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं ने किए नागचंद्रेश्वर के दर्शन

उज्जैन, (एजेंसी)। नागपंचमी के मौके पर मध्यप्रदेश के शिवालयों और नाग मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की जा रही है। उज्जैन में श्री महाकालेश्वर मंदिर की तीसरी मंजिल पर स्थित नागचंद्रेश्वर मंदिर के पट रात 12 बजे खोले गए। महानिर्वाणी अखाड़ा के महंत श्री विनीत गिरी महाराज ने त्रिकाल पूजन किया। इसके बाद श्रद्धालुओं के लिए दर्शन का सिलसिला शुरू हुआ। उज्जैन के नागचंद्रेश्वर मंदिर में रात आठ बजे तक 7 लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन कर लिए हैं। बारिश के बावजूद गेट नंबर 4 पर भक्तों की 2 किमी लंबी लाइन लगी है। श्री नागचंद्रेश्वर मंदिर के पट हर साल सिर्फ एक बार नागपंचमी के दिन 24 घंटे के लिए खोले जाते हैं। क्राउड मैनेजमेंट और सिक्योरिटी के लिए 200 सीनियर अफसर, 2500 कर्मचारी, 1800 पुलिसकर्मी और 560 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं।

मंगलवार दोपहर 12 बजे महानिर्वाणी अखाड़ा की ओर से पूजन होगा। शाम को भगवान महाकाल की आरती के बाद पुजारियों और पुरोहितों द्वारा अंतिम पूजा की जाएगी। इसके बाद रात 12 बजे नागचंद्रेश्वर मंदिर के पट एक साल के लिए बंद कर दिए जाएंगे।

उधर, सेंधवा के नांगलवाड़ी में अब तक 50 हजार से ज्यादा श्रद्धालु भिलटदेव के दर्शन कर चुके हैं। इससे पहले सोमवार रात 10 बजे बाबा का दूध से अभिषेक किया। रात 1 बजे फूलों से श्रृंगार हुआ। सुबह 4 बजे महाआरती के बाद 56 पकवानों का भोग लगाया गया।

डिंपल पर कमेंट करने वाले मौलाना रशीदी को पीटा

नोएडा, (एजेंसी)। सपा सांसद डिंपल यादव पर कमेंट करने वाले ऑल इंडिया इमाम एसोसिएशन के अध्यक्ष मौलाना साजिद रशीदी पर हमला हुआ है। मंगलवार को मौलाना नोएडा के एक चैनल के लाइव डिबेट में पहुंचे थे। डिबेट खत्म होने के बाद सपा नेता कुलदीप भाटी ने उन पर हमला कर दिया। ताबड़तोड़ कई थप्पड़ जड़ दिए। मौलाना ने मौके से भागकर अपनी जान बचाई।

सिक्योरिटी वालों ने हमलावरों से उन्हें छुड़ाया। ये मामला सेक्टर-126 का है। मौलाना साजिद ने कुलदीप भाटी और मोहित नागर पर हमला करने का आरोप लगाया है। मौलाना आरोपियों के खिलाफ थाना सेक्टर-126 में शिकायत दर्ज कराने पहुंचे। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

देवघर में बस-ट्रक भिड़े, 5 कांवड़ियों समेत 6 की मौत

देवघर / दुमका, (एजेंसी)। देवघर में बस और ट्रक के बीच टक्कर में 5 कांवड़ियों समेत 6 की मौत हो गई। 24 कांवड़िए घायल हुए हैं, जिनमें से कुछ की हालत गंभीर है। हादसा मंगलवार सुबह 5 बजे देवघर के मोहनपुर प्रखंड के जमुनिया चौक के पास नावापुरा गांव में हुआ। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस का आधा हिस्सा पूरी तरह से ध्वंस गया। कांवड़ियों के

झोले और सामान बस में लटके दिख रहे हैं। हादसे में बस का ड्राइवर सीट समेत नीचे गिर गया। 100 मीटर तक बस बिना ड्राइवर के चली। देवघर डीसी नमन प्रियेश लकड़ा ने बताया- सुबह लगभग 05:30 बजे मोहनपुर प्रखंड के जमुनिया चौक के पास बस हादसा हुआ है। इसमें 6 लोगों की मौत हुई है। 24 लोग घायल हैं। 8 घायलों का एम्स में इलाज चल रहा है। बाकी लोग सदर अस्पताल में भर्ती हैं। हालांकि गोड्डा सांसद निशिकांत दुबे ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर 18 लोगों की मौत की जानकारी दी थी।

हरियाणा भाजपा ने हारी 42 सीटों पर की मेगा प्लानिंग

चंडीगढ़, (एजेंसी)। हरियाणा बीजेपी की विधायक दल की मीटिंग खत्म हो गई। चंडीगढ़ स्थित सीएम आवास पर मुख्यमंत्री नायब सैनी की अध्यक्षता में करीब ढाई घंटे चली इस मीटिंग में कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई। मीटिंग में तय किया गया था कि हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 में हारी 42 विधानसभा सीटों के लिए मेगा प्लानिंग करेगी। इसके लिए विधायकों को प्रभारी बनाया जाएगा। सबसे अहम बात यह है कि विधायक इन जिलों में जितने भी काम होंगे उनकी देख रेख में ही किए जाएंगे। इसके अलावा संगठन का काम भी यही विधायक के जिम्मे रहेगा। हरियाणा बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली ने मीटिंग के बाद बताया कि विधायकों को जिन जिलों का प्रभारी लगाया गया है, उसकी लिस्ट जल्द जारी की जाएगी।

गोधराकांड के बाद हुए दंगा मामलों के 3 दोषी बरी

अहमदाबाद, (एजेंसी)। गुजरात हाईकोर्ट ने सोमवार को सुनवाई के दौरान तीन लोगों को बरी कर दिया। इन्हें 2006 में आणंद सेशन कोर्ट ने 2002 के गोधरा कांड के बाद हुए दंगों के मामले के लिए दोषी ठहराया था। हाईकोर्ट ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष के गवाह ने इनकी पहचान कैसे की यह नहीं बताया। और न ही गवाह ने 100 से अधिक लोगों की भीड़ में देखे गए प्रत्येक आरोपी की भूमिका का उल्लेख किया। जस्टिस गीता गोपी ने यह आदेश दो अपीलों को स्वीकार करते हुए पारित किया। उक्त अपीलों में से एक सचिनभाई हसमुखभाई पटेल और अशोकभाई जशभाई पटेल द्वारा दायर और दूसरी अशोक बनारसी भरतभाई गुप्ता द्वारा दायर की गई थी। अभियुक्तों को भारतीय दंड संहिता की धारा 149 (गैरकानूनी रूप से एकत्रित होने का साझा उद्देश्य) के लिए पांच वर्ष कारावास और धारा 147 (दंगा) के तहत अपराध के लिए छह माह के कठोर कारावास की भी सजा सुनाई गई थी। पहचान स्वीकार करते समय सावधानी बरतनी चाहिए- कोर्ट हाईकोर्ट ने आदेश में कहा- ऐसे मामलों में जहां अभियुक्त गवाह के लिए अजनबी हो।

राहुल बोले- दम है तो पीएम कहें कि ट्रम्प झूठे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर दूसरे दिन बहस में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा ने भाषण दिया। राहुल ने कहा- ट्रम्प ने 29 बार कहा है कि हमने युद्ध रुकवाया। अगर दम है तो प्रधानमंत्री यहां सदन में यह बोल दें कि वह झूठ बोल रहे हैं।

राहुल ने कहा- अगर पीएम मोदी में इंदिरा गांधी की तरह 50 प्रतिशत भी दम है तो कह दीजिए कि ऑपरेशन सिंदूर में भारत का एक भी फाइटर जेट नहीं गिरा है। प्रधानमंत्री अपनी छवि बचाने के लिए, जिस तरह से सशस्त्र बलों का इस्तेमाल कर रहे हैं, वह देश के लिए खतरनाक है। राहुल से पहले प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा- लोग सरकार के भरोसे

पहलगाम गए थे, लेकिन सरकार ने उन्हें भगवान भरोसे छोड़ दिया। पहलगाम में जब लोगों को मारा जा रहा था, तब वहां एक भी सुरक्षाकर्मी नहीं दिखा। पीएम ऑपरेशन सिंदूर का श्रेय लेने आगे आ जाते हैं, जिम्मेदारी लेने क्यों नहीं आते।

सरकार ने 35 मिनट में सरेंडर कर दिया- कल राजनाथ सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर रात 1:05 बजे शुरू हुआ और 1:35 बजे हमने पाकिस्तान को फोन करके बताया कि हमने मिलिट्री ठिकानों पर हमला नहीं किया है। दो लोगों के बीच लड़ाई हो रही थी, एक आदमी ने दूसरे को सीधे जाकर यह बताया कि आपके पास लड़ने की पॉलिटिकल विल है ही नहीं आप लड़ना ही नहीं चाहते हो।

स्वतंत्रता दिवस समारोह पूरी गरिमा और हर्षोल्लास से मनाया जाए - संभागायुक्त सिंह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल, (एजेंसी)। आगामी 15 अगस्त को पूरे प्रदेश की भांति भोपाल में भी 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा। भोपाल में राज्य स्तरीय मुख्य समारोह का आयोजन पूरी गरिमा और हर्षोल्लास के साथ हो। राज्य स्तरीय मुख्य समारोह लाल परेड ग्राउंड पर प्रात: 9.00 बजे से आयोजित होगा। संभागायुक्त डॉ. संजीव सिंह ने सोमवार को कमिश्नर कार्यालय के सभाकक्ष में संबंधित विभागों की बैठक ली और निर्देश दिए कि मुख्य समारोह की सभी तैयारियां उत्कृष्ट हों तथा समय पर पूर्ण की जाएं। सभी विभाग उन्हें सौंपे गए दायित्व को तत्परतापूर्वक पूर्ण करें। बैठक में नगर निगम आयुक्त श्री हरेंद्र नारायण, एडीएम श्री प्रकाश नायक, उपायुक्त राजस्व किरण गुप्ता, एसीपी ग्रामीण श्री पंकज श्रीवास्तव, सेनानी 23वीं वाहिनी राजेश्वरी माहोबिया सहित सभी संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

संभागायुक्त ने निर्देश दिए कि बारिश के मद्देनजर सभी व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए। बैठक व्यवस्था उत्तम हो तथा कार्यक्रम में आने वाले स्कूली बच्चों और परेड में भाग लेने वाले पुलिस बल आदि का विशेष ध्यान रखा जाए। वाहनों की पार्किंग व्यवस्था एवं यातायात व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान दिया जाए। कार्यक्रम स्थल पर शुद्ध पेयजल व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। स्वास्थ्य विभाग प्राथमिक चिकित्सा की पूरी व्यवस्था रखे। लोक निर्माण विभाग, नगर निगम, बिजली विभाग सहित सभी विभाग अपने दायित्वों का निर्वहन करें। सभी विभाग आपसी समन्वय से काम करें और उत्कृष्ट परिणाम दें।

संभागायुक्त श्री सिंह ने कहा कि मुख्य कार्यक्रम में सम्मिलित होने के पहले मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शौर्य स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे जिसकी व्यवस्था संस्कृति विभाग द्वारा राजधानी परियोजना के सहयोग से पूर्ण की जाए। गत वर्ष की भांति रविंद्र भवन में शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। उन्होंने कहा कि कलेक्टर भोपाल द्वारा गणमान्य नागरिकों, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों तथा अधिकारियों को आमंत्रित करने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिवारों एवं प्रदेश के लोकतंत्र सेनानियों को सम्मान पूर्वक कार्यक्रम में आमंत्रित किया जाए। वृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को घर जाकर सम्मानित किया जाए।

मुख्यमंत्री मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस पर राज्य स्तरीय कार्यक्रम में होंगे शामिल

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 29 जुलाई मंगलवार को दोपहर 12 बजे कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर भोपाल में 'अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस' के अवसर पर राज्य स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ करेंगे। वे इस अवसर पर वन्य जीव ट्रांस लोकेशन, रेस्क्यू एवं डॉग स्क्वॉड वाहनों का लोकार्पण करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव वन्य जीव संरक्षण गतिविधियों से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन कर वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली वन सुरक्षा समितियों, ईको विकास समिति, ग्राम वन समिति और वन कर्मियों को पुरस्कृत भी करेंगे। राज्य स्तरीय कार्यक्रम में वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री दिलीप सिंह अहिरवार, अपर मुख्य सचिव वन श्री अशोक बर्णवाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री असीम श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य जीव श्री शुभरंजन सेन, वन सुरक्षा समितियों, ईको विकास समिति, ग्राम वन समिति के सदस्य और वन विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहेंगे।

प्रकृति संरक्षण के प्रयासों में सहभागिता बढ़ाना जरूरी-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस (वर्ल्ड नेचर कंजर्वेशन डे) के अवसर पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रकृति के संरक्षण के प्रयासों में सहभागिता बढ़ाना जरूरी है। प्रदेशवासी इस दिशा में संकल्पबद्ध होकर कार्य करें। यह दिवस हम सभी को प्रकृति और जैव विविधता के संरक्षण के प्रयासों को गति देने के लिए प्रेरित करता है। साथ ही पारिस्थितिकी तंत्रों (इकोसिस्टम्स) की सुरक्षा के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व का भी बोध कराता है। इस दिशा में सभी के प्रयासों से ही भावी पीढ़ियों को प्रकृति के अमूल्य उपहारों से समृद्ध पर्यावास मिल सकेगा।

रायसेन जिले के ग्राम बागोद में जप्त की गई खाद - प्रयोगशाला में जांच में अमानक पाई गई

भोपाल। रायसेन जिले के ग्राम बागोद में विगत 24 जुलाई की रात्रि में डीएपी के नाम से बेची जा रही नकली खाद की 92 बोरियां जप्त की गई थीं तथा खाद के सैम्पल लेकर जांच के लिए उर्वरक एवं गुण नियंत्रण प्रयोगशाला भोपाल भेजे गए थे। प्रयोगशाला भोपाल की जांच में जप्त की गई खाद अमानक स्तर की पाई गई। उल्लेखनीय है कि विगत 24 जुलाई को ग्राम बागोद में अमानक खाद जप्त कर सलामतपुर थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई थी। इस मामले में मौके से पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ की जा रही है तथा नियमानुसार कार्रवाई प्रचलित है।

जनजातीय संग्रहालय में होगा निदा फाजली को समर्पित याद ए रफ्तगाँ

भोपाल। मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिसर और संस्कृति विभाग द्वारा प्रख्यात शायर पदमश्री निदा फाजली को समर्पित याद ए रफ्तगाँ संगोष्ठी का 29 जुलाई को सायं 5:30 बजे जनजातीय संग्रहालय श्यामला हिल्स भोपाल में आयोजन होगा। संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक और धर्मस्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। उर्दू अकादमी के निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने बताया कि कार्यक्रम में मै निदा निदा फाजली पर श्री अतुल गंगवार द्वारा सम्प्रेषण एवं श्री अदबी कॉकटेल द्वारा निर्मित डाक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन भी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम 3 सत्रों पर आधारित होगा।

नागपंचमी पर भगवान श्री नागचंद्रेश्वर मन्दिर के खुले पट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल, (एजेंसी)। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री महाकालेश्वर मन्दिर प्रांगण में मंगलवार को नागपंचमी पर्व मनाया जा रहा है। श्री नागचन्द्रेश्वर भगवान के पट 28 जुलाई को रात्रि 12 बजे खोले गए। लाखों की संख्या में श्रद्धालु भगवान श्री नागचंद्रेश्वर के दर्शन करेंगें। श्री महाकालेश्वर मंदिर के द्वितीय तल पर श्री नागचन्द्रेश्वर भगवान का पट खुलने पर श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़ा के महंत श्री विनितगिरी महाराज, प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी राज्यमंत्री संपतिया उइके द्वारा पूजन किया गया। इसके बाद दोपहर 12 बजे शासकीय पूजन किया गया है। श्री

महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति की जनसंपर्क अधिकारी गौरी जोशी से प्राप्त जानकारी अनुसार 29 जुलाई, रात 12:15 से प्रात: 11 बजे तक 4 लाख 462 दर्शनार्थियों ने श्री नागचंद्रेश्वर भगवान के दर्शन किए।

समाधान ऑनलाइन, सीएम डैशबोर्ड एवं हेल्पलाइन की लंबित शिकायतों के शीघ्र निराकरण के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल, (एजेंसी)। कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह के निर्देशन में सोमवार को समय-सीमा पत्रों की समीक्षा हेतु टीएल बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला पंचायत सीईओ इला तिवारी एवं अपर कलेक्टर श्री अंकुर मेश्राम द्वारा की गई। बैठक में जिले के सभी अधिकारियों को समाधान ऑनलाइन, सीएम डेस्कबोर्ड एवं सीएम हेल्पलाइन में लंबित शिकायतों के निराकरण को उच्च प्राथमिकता पर लेने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों को स्पष्ट रूप से कहा गया कि आगामी दो दिवस में समाधान ऑनलाइन से संबंधित शिकायतों को गंभीरतापूर्वक लेते हुए निराकरण सुनिश्चित करें। इसके साथ ही सभी एसडीएम और विभागीय अधिकारी व्यक्तिगत रूप से लंबित शिकायतों की मॉनीटरिंग करें और उनका शीघ्र निराकरण सुनिश्चित करें।

बैठक में यह भी निर्देशित किया गया कि कोई भी शिकायत बिना

उचित कारण के फोर्स क्लोज न की जाए एवं पुअर डिस्पोजल शिकायतों का पुन: परीक्षण कर उन्हें पुन: निराकृत किया जाए। जिला पंचायत सीईओ इला तिवारी ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान एवं जिले में किए जा रहे वृक्षारोपण की पोर्टल पर इंट्री एवं प्रगति रिपोर्ट बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग साफ्टवेयर के माध्यम से चिन्हित जगह एवं पौधों का ही वृक्षारोपण करें। इस अवसर पर सभी एसडीएम तथा संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

डेंगू और मलेरिया के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए किए विविध कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल, (एजेंसी)। वाहक जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत सोमवार को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनीष शर्मा के निर्देशन में एवं जिला मलेरिया अधिकारी स्मृता नामदेव के नेतृत्व में भोपाल में डेंगू और मलेरिया के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रमों का उद्देश्य लोगों को इन बीमारियों के बारे में जानकारी प्रदान करना और उन्हें बचाव के उपायों के बारे में बताना है। महर्षि विद्या मंदिर अयोध्या नगर, वार्ड68 ज़ोन-16 मंक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों को डेंगू, मलेरिया, चिकुनगुनिया, फाइलेरिया और जापानी एन्सेफ्लाइटिस जैसी बीमारियों के कारण और बचाव के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान लार्वा सर्वेक्षण भी किया गया और लोगों को मच्छरों के प्रजनन को रोकने के लिए जागरूक किया गया। जोन-5 वार्ड-23 चटाई पुरा बुधवारा और आंगनवाड़ी केंद्र-510 में भी जागरूकता अभियान चलाए गए, जहां लार्वा सर्वेक्षण, पंपलेट वितरण और जागरूकता अभियान से लोगों को समझाया गया। इस दौरान

लोगों को बरसात के मौसम में होने वाली बीमारियों से बचाव और रोकथाम के उपायों के बारे में बताया गया। ज्योति जैन गर्ल्स हॉस्टल पर इंद्रपुरी सी सेक्टर वार्ड-67 जोन-15 में मच्छर जनित बीमारियों पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें आशा प्रशिक्षण भी दिया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य आशा कार्यकर्ताओं को डेंगू और मलेरिया के प्रति जागरूक करना और उन्हें बचाव के उपायों के बारे में जानकारी प्रदान करना है।

जिला मलेरिया अधिकारी स्मृता नामदेव ने बताया कि इन कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को डेंगू और मलेरिया के प्रति जागरूक किया जा रहा है और उन्हें बचाव के उपायों के बारे में जानकारी प्रदान की जा रही है। इससे लोगों को इन बीमारियों से बचाव में मदद मिलेगी और शहर में डेंगू और मलेरिया के मामलों में कमी आएगी।

वित्तीय अनियमितता पर आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में पदस्थ 7 सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की सेवा समाप्त

मीडिया ऑडीटर, भोपाल, (एजेंसी)। आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में पदस्थ 7 सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की सेवा समाप्ति राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मध्यप्रदेश द्वारा की गई है। इन सभी पर वित्तीय धोखाधड़ी के आरोप प्रमाणित होने पर मिशन संचालक द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के संविदा मानव संसाधन मैनुअल के तहत यह कार्रवाई की गई है। इन सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा शासन द्वारा दी जाने वाली प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन राशि को पात्रता न होने पर भी कूटरचित दस्तावेज प्रस्तुत कर राशि प्राप्त की गई थी। आमजन को मूलभूत स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिरों की स्थापना की गई है। इन केंद्रों में मातृ स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य, असंचारी रोग, क्षय रोग सहित विभिन्न स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया करवाने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की पदस्थापना की गई है।

सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों को मानदेय के साथ साथ प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन राशि भी दी जाती है, जो बीमारियों की स्क्रीनिंग, उपचार और फॉलोअप के लिए मानदेय के अलावा अतिरिक्त रूप से दी जाती है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मध्यप्रदेश द्वारा समीक्षा के दौरान ये पाया गया था कि प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन राशि को पात्रता न होने पर भी निकाल लिया गया है। जिन 7 सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों को मिशन द्वारा सेवा से पृथक किया गया है,उनके द्वारा अप्रैल 2024 से मार्च 2025 के बीच में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर स्क्रीनिंग, उपचार और फॉलोअप के लिए दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि को कूटरचित दस्तावेजों के माध्यम से निकाल लिया गया था। राज्य स्तरीय अधिकारियों द्वारा इन कर्मचारियों के प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन राशि अभिलेखों, प्राप्त राशि, वास्तविक रूप से किए कार्य और इस हेतु पात्र राशि की जांच की गई थी। जांच के दौरान इन कर्मचारियों ने भी स्वीकार किया कि उनके द्वारा कूटरचित दस्तावेजों के माध्यम से अतिरिक्त लाभ प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मध्यप्रदेश 2025 के मानव संसाधन मैनुअल के अनुरूप संविदा अधिकारी, कर्मचारी द्वारा कदाचरण करने और अनियमितता में सम्मिलित होने पर सेवा समाप्ति की कार्यवाही की गई है। इनके द्वारा कार्य किए बिना ही राशि निकाल कर गरीब जनता के साथ भी नैतिक धोखाधड़ी की गई है। उज्जैन जिले के महिदपुर ब्लॉक स्थित स्वास्थ्य केंद्र महुदी न्यू में पदस्थ ज्योति निम्बड़वा, सागर जिले के शाहगढ़ ब्लॉक स्थित स्वास्थ्य केंद्र नारवा में पदस्थ निधि बोस, अनूपपुर जिले के अनूपपुर ब्लॉक स्थित स्वास्थ्य केंद्र मौहरी में पदस्थ पूजा पनिका, जबलपुर जिले के शाहपुरा ब्लॉक स्थित स्वास्थ्य केंद्र सूखा में पदस्थ पूनम महतो, धार जिले के तिरला ब्लॉक स्थित स्वास्थ्य केंद्र भूतिबावड़ी में पदस्थ आशीष पटेल, अशोकनगर जिले के मुंगावली ब्लॉक स्थित स्वास्थ्य केंद्र बमौरी टांका में पदस्थ गौरी दामोर, बैतूल जिले के आठनेर ब्लॉक स्थित स्वास्थ्य केंद्र भिवापुर में पदस्थ योगिता है।

कैंसर स्क्रीनिंग का फर्जी रिकॉर्ड बनाया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल, (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मध्यप्रदेश ने आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में पदस्थ 7 सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों की सेवाएं समाप्त कर दी हैं। इन पर कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन राशि लेने के गंभीर आरोप साबित हुए हैं। ह्यूरू द्वारा की गई समीक्षा में पाया गया कि इन अधिकारियों ने अप्रैल 2024 से मार्च 2025 के बीच उच्च रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर स्क्रीनिंग, उपचार और फॉलोअप जैसी सेवाओं का फर्जी रिकॉर्ड तैयार कर प्रोत्साहन राशि निकाली।

जांच में यह साफ हुआ कि कई मामलों में कार्य किए बिना ही भुगतान लिया गया। राज्य स्तरीय जांच टीम ने जब अभिलेखों और वास्तविक कार्य का मिलान किया, तो कर्मचारियों

ने खुद भी स्वीकार किया कि गलत तरीके से फायदा उठाया गया। आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का उद्देश्य मातृ स्वास्थ्य, शिशु स्वास्थ्य और असंचारी रोगों की स्क्रीनिंग जैसी मूलभूत सेवाएं गरीबों तक पहुंचाना है। इन अधिकारियों के गलत आचरण से न केवल शासन को वित्तीय नुकसान हुआ, बल्कि आम जनता के स्वास्थ्य अधिकारों से भी खिलवाड़ हुआ। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अनुसार, संविदा कर्मचारी द्वारा किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता या कदाचार पाए जाने पर सेवा समाप्ति की कार्रवाई की जाएगी। इन मामलों में कार्रवाई 2025 के मानव संसाधन मैनुअल के तहत की गई है।

विश्व हेपेटाईटिस दिवस पर जागरूकता कार्यक्रमों एवं स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल, (एजेंसी)। विश्व हेपेटाईटिस दिवस के अवसर पर सोमवार को हेपेटाईटिस स्क्रीनिंग एवं जागरूकता शिविरों का आयोजन किया गया। यह दिवस हेपेटाईटिस बी वायरस की खोज करने वाले डॉ. बरूच ब्लुमबर्ग की जन्मतिथि पर मनाया जाता है। इस वर्ष यह दिवस लेट्स ब्रेक इट डाउन की थीम पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सेंट्रल जेल भोपाल में विश्व हेपेटाइटिस दिवस के अवसर पर एक महीने का स्क्रीनिंग शिविर की शुरुआत की गई। जो कि आगामी एक माह तक संचालित किया जाएगा। जिसमें बंदियों की हेपेटाइटिस बीसी एचआईवी , वीडीआरएल, एसटीआई, टीबी स्क्रीनिंग की जाएगी। पहले दिन 175 कैदियों की जांच की गई। केन्द्र सरकार द्वारा 2018 में राष्ट्रीय वायरल हेपेटाईटिस कण्ट्रोल कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। जिसका उददेश्य 2030 तक हेपेटाईटिस सी का उन्मूलन करना है।

कार्यक्रम के तहत हेपेटाईटिस बी और सी से संक्रमित लोगों की स्वास्थ्य जटिलताओं और मृत्यु दर को कम करना है। वायरल हेपेटाईटिस कण्ट्रोल कार्यक्रम के अंतर्गत लीवर सिरोसिस और लीवर कैंसर के खतरों को कम के साथ ही हेपेटाईटिस ए और ई से स्वास्थ्य को होने वाले नुकसान और मृत्यु की दर को कम करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। हेपेटाईटिस एक

वायरल संक्रमण है,जो लीवर को संक्रमित करता है। हेपेटाईटिस ए और ई का संक्रमण दूषित खाने और पानी की वजह से फैलता है। हाथों की स्वच्छता एवं साफ भोजन और पानी के इस्तेमाल से इसका प्रसार रोका जा सकता है। हेपेटाईटिस सी का प्रसार संक्रमित रक्त से होता है। हेपेटाईटिस बी के मरीज़ों में वर्षों तक कोई लक्षण प्रगट नहीं होते हैं। इसलिए समय-समय पर चिकित्सकीय परामर्श अनुसार जांच करवाना बेहद आवश्यक है। हेपेटाईटिस बी होने पर शरीर में दर्द, पीलिया, पेट में पानी भर जाना, लीवर में दर्द होना, खून की उल्टियां होना, भूख ना लगना, पेट में सूजन आना जैसे लक्षण हो सकते हैं। क्रॉनिक हेपेटाईटिस की स्थिति में लीवर सिरोसिस और लीवर कैंसर जैसी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। हेपेटाईटिस बी का संक्रमण असुरक्षित इंजेक्शन, संक्रमित खून, गोदना का प्रयोग या नाक अथवा कान को छेदने में संक्रमित सुई के इस्तेमाल, असुरक्षित यौन संबंध, असुरक्षित समलैंगिग संबंध से फैल सकता है।

10वीं, 12वीं के टॉपर्स का स्वतंत्रता दिवस पर होगा सम्मान

15 अगस्त पर सुबह प्रभात फेरी और रैली भी निकालें: कलेक्ट्रेट

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। जिले में इस साल 15 अगस्त के मुख्य समारोह में एक नई पहल होगी। जिले के ऐसे छात्र जिन्होंने प्रदेश भर में 10वीं और 12वीं में टॉप किया है, उन्हें समारोह के दौरान सम्मानित किया जाएगा। मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आज दोपहर स्वतंत्रता दिवस समारोह के आयोजन संबंधी बैठक हुई। इस बैठक में कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला ने यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया।

अधिकारियों को सौंपी गई अलग-अलग जिम्मेदारी: समारोह को गरिमापूर्ण तरीके से मनाने के लिए अधिकारियों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गईं। नगर निगम को मंच व्यवस्था और साफ-सफाई की जिम्मेदारी दी गई है। आकर्षक परेड के आयोजन के लिए पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन में पुलिस बल, सीआईएफ सीनियर एवं जूनियर परेड कार्य रक्षित निरीक्षक द्वारा करवाया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस पर सुबह प्रभात फेरी और रैली भी निकाली जाएगी।

छात्रों को भी मिलेगा प्रशस्ति पत्र: कलेक्टर शुक्ला ने कहा कि कर्मचारियों और अधिकारियों के साथ-साथ प्रवीण सूची में स्थान बनाने वाले छात्रों को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने यह भी निर्देश जारी किए हैं कि सभी उपखंड अधिकारी अपने-अपने उपखंड में स्वतंत्रता दिवस को गरिमापूर्ण तरीके से मनाएं। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालक अधिकारी गजेंद्र सिंह नागेश, अपर कलेक्टर पीके सेन गुप्ता, संयुक्त कलेक्टर संजीव कुमार पांडे, नगर निगम आयुक्त डीके शर्मा, डिप्टी कलेक्टर माइकल तिर्की, सौरव मिश्रा सहित विभिन्न विभागों के प्रमुख मौजूद रहे।

जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत ने सुनी 117 आवेदकों की समस्याएं निराकरण के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जनसुनवाई में अपर कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा जिले के दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों से आए 117 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अपर कलेक्टर ने सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि जिन आवेदन पत्रों में समय सीमा निर्धारित किया जाता है उसको तत्काल विभाग प्रमुख अपने संज्ञान में लेकर निराकरण कर संबंधित हितग्राही को सूचित करे। अपर कलेक्टर ने जनसुनवाई में प्राप्त होने वाले आवेदनों पर पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं। इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर एस पी मिश्रा, अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी धनंजय मिश्रा सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। आज आयोजित जनसुनवाई में समस्त उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय जनसुनवाई से जुड़े रहे।

जमीनी विवाद में युवक की पिटाई, आरोपियों ने बहन से की अभद्रता, एफआईआर दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले के जमीनी विवाद के चलते एक भाई और बहन के साथ मारपीट की गई। घटना 25 जुलाई की रामपुर नैकिन थाना क्षेत्र के मलदेवा गांव की है। दरअसल, मलदेवा निवासी जितेंद्र कुमार चतुर्वेदी अपनी बहन को मोहनिया टनल से घर ला रहा था। इसी दौरान ममदर जूड़ा नाला के पास दो गाड़ियों में सवार अपिल पांडे, चेतू पांडे और प्राणु पांडे सहित अन्य लोगों ने उनका रास्ता रोक लिया।

बेसबॉल बैट और स्टंप से की मारपीट: आरोपियों ने पहले गाली-गलौज की। फिर बेसबॉल बैट और स्टंप से जितेंद्र को बुरी तरह मारा-पीटा। इससे उसके सिर में गंभीर चोट आई। बीच-बचाव करने पर उसकी बहन को भी मारा गया और उसके साथ अभद्रता की गई।

पैसे का लालच देकर चुप रहने का दबाव बनाया: आरोपियों ने दोनों भाई-बहन को जबरदस्ती कैंपर गाड़ी (एमपी53 जीए 3388) में बैठाकर अपने घर ले गए। वहां उन्हें धमकी दी कि किसी से कुछ न कहें। इलाज और पैसे का लालच देकर मुंह बंद रखने का दबाव बनाया गया। घरवालों को सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को छुड़ाया। आरोपियों ने राजीनामा का भी दबाव बनाया और जान से मारने की धमकी दी।

बुजुर्ग परिवार ने दी आत्मदाह की चेतावनी, पड़ोसी से परेशान 75 वर्षीय बोला- थाने से सीएम तक शिकायत; नहीं हुई कोई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले में एक बुजुर्ग ने पूरे परिवार के साथ पुलिस अधीक्षक कार्यालय के सामने आत्मदाह की चेतावनी मंगलवार को दी है। हटवा खास गांव के 75 वर्षीय रामकिशोर नामदेव का आरोप है कि पिछले एक वर्ष से उनके पड़ोसी विनोद यादव और उसका परिवार उन्हें लगातार परेशान कर रहा है। मामला जमीनी विवाद से जुड़ा हुआ है। यादव परिवार उनकी जमीन पर कब्जा किए हुए हैं। इसे लेकर यादव परिवार की ओर से मारपीट भी की जा रही है। रामकिशोर के कराए गए ट्यूबवेल पर भी अशोक यादव ने कब्जा कर लिया है। वह पानी पीने के लिए भी नहीं देता है।

तीन बाद करेंगे आत्मदाह: रामकिशोर ने बताया है कि पड़ोसी परिवार लाठी-डंडों और पत्थरों से उनके घर पर हमला करता है। उन्हें गाली-गलौज का सामना करना पड़ता है। घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है। पीड़ित ने थाना कमर्जी, एसपी, कलेक्टर, डीआईजी रीवा, आईजी रीवा और मुख्यमंत्री तक को शिकायत पत्र भेजे हैं। लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। नामदेव परिवार ने मंगलवार को दोपहर 1 बजे चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि अगर तीन दिन के भीतर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई तो वे पूरे परिवार के साथ एसपी कार्यालय में आत्मदाह कर लेंगे। उन्होंने कहा कि अब उनके पास आत्मदाह के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा है। पड़ोसी कृष्ण बहादुर सिंह और देवेंद्र सिंह ने बताया कि यादव परिवार की दहशत से वे खुद रातभर पहरा देते हैं। उनका कहना है कि पुलिस की निष्क्रियता ने आरोपियों के हौसले बढ़ा दिए हैं।

टीआई बोले- दोनों पक्षों पर की कार्रवाई: थाना प्रभारी विवेक द्विवेदी ने बताया है कि यह मामला भूमि विवाद से जुड़ा है और राजस्व विभाग में इसका प्रकरण लंबित है। पुलिस ने दोनों पक्षों पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की है। उन्होंने कहा कि कानून हाथ में लेने पर कड़ी कार्रवाई होगी। रामकिशोर का आरोप है कि पुलिस प्रशासन पूरी तरह पक्षपाती है। उन्होंने कहा कि अब तक उन्हें कोई सुरक्षा नहीं मिली है। इसी कारण उनका धैर्य जवाब दे गया है।

तेज बारिश से महान नदी में आई बाढ़

सीधी। जिले के आसपास के इलाकों में बीते कुछ दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश से महान नदी में मंगलवार को अचानक बाढ़ आ गई है। इससे मझौली से कमचढ़, रीवा और सीधी को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग पूरी तरह जलमग्न हो गया है। पुल के ऊपर से करीब 3 फीट तक पानी बह रहा है। इस कारण इस मार्ग पर आवागमन पूरी तरह से ठप हो गया है।

संजय टाइगर रिजर्व के 7 गांव का शहर से संपर्क टूटा: यह मार्ग सीधी और रीवा जिले को संजय टाइगर रिजर्व से जोड़ता है। यहां दर्जनों गांव बसे हुए हैं। अब इन गांवों का संपर्क शहर से कट गया है। टाइगर रिजर्व के करीब 6 से 7 गांव पूरी तरह से बाहरी दुनिया से अलग-थलग पड़ गए हैं।

देवघटा शिव मंदिर में जलाभिषेक, सैकड़ों श्रद्धालुओं ने की पूजा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले के देवघटा शिव मंदिर में मंगलवार को सैकड़ों श्रद्धालुओं ने गाजे-बाजे के साथ जलाभिषेक किया। सुबह 11 बजे नगर से रैली के रूप में निकले भक्त जब देवघटा पहुंचे तो पूरा क्षेत्र हर-हर महादेव के जयकारों से गूंज उठा।

पूर्व विधायक केदारनाथ शुक्ला आठ वर्षों से लगातार यह धार्मिक आयोजन करते आ रहे हैं। उन्होंने इस अवसर पर कहा, यह केवल जलाभिषेक नहीं, हमारी सामूहिक प्रार्थना है भोलेनाथ से। हमारे क्षेत्र में शांति बनी रहे, लोग रोग-शोक से मुक्त रहें और सीधी जिले में विकास के नए द्वार खुलें। पंडित केदारनाथ शुक्ला भारतीय जनता पार्टी से छह बार विधायक रह चुके हैं। पिछली बार उन्हें पार्टी टिकट नहीं मिला था। इसके चलते उन्होंने निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा था।

पुलिस और आदिवासियों के बीच झड़प, कोल ब्लॉक के लिए 2 हेक्टेयर जमीन पर कब्जे लेने पहुंची टीम

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। जिले के तेंदुहा गांव में मंगलवार को प्रशासन और स्थानीय निवासियों के बीच तनावपूर्ण स्थिति बन गई। प्रशासनिक अमला भारी पुलिस बल के साथ दो हेक्टेयर सरकारी जमीन पर कब्जा लेने पहुंचा था। इसके बाद इस सरकारी जमीन पर रह रहे लोग और प्रभावित ग्रामीण वहां जमा हो गए। इस दौरान प्रशासन और स्थानीय लोगों के बीच तीखी बहस और झड़प भी हुई। इस बीच इलाके में तनाव की स्थिति बनी रही।

मामला बांधा कोल ब्लॉक से जुड़ा: यह मामला बांधा कोल ब्लॉक से जुड़ा है, जहां तेंदुहा गांव में दो हेक्टेयर सरकारी जमीन है। यह कोल ब्लॉक बिरला ग्रुप की कंपनी ईएमआईएल को आवंटित किया गया है। इस कोल ब्लॉक में पांच गांव - बांधा, तेंदुहा, देवरी, पाठ और जिगनहवा की कुल 776 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण होना है। दरअसल, यह वही कोल ब्लॉक है जो पिछले दिनों सुर्खियों में रहा था। यहां भू-अर्जन अधिकारी ने 3362 घरों को अवैध घोषित कर दिया गया था, जिन्हें मुआवजा पाने के लिए बनाया गया था।

ग्रामीण बोले- हमें जबरन यहां से भगाया जा रहा: गांव के निवासी दशाराम वैश्य ने कहा, हमारा सब कुछ जंगल ही है। जंगल में ही जीना है, जंगल में ही मर जाना है। हमें जबरन यहां से भगाया जा रहा है। एक अन्य विस्थापित कौशल सिंह तेंकाम ने बताया, हमारी कहीं सुनवाई नहीं हो रही है। हम लोग लगातार जिला प्रशासन को आवेदन दे रहे हैं, फिर भी हमारी कोई सुनवाई नहीं हो रही। आज जबरदस्ती पुलिस बल के दम पर हमें यहां से हटाया जा रहा है।

एसडीएम बोले- जमीन सरकारी है: मौके पर पहुंचे देवसर एसडीएम अखिलेश सिंह ने कहा कि जमीन सरकारी है और उन्हें सरकारी जमीन कंपनी को देनी है। हालांकि, वे इससे अधिक कुछ बोलने को तैयार नहीं थे।

आरटीओ ने 18 वाहनों पर की कार्रवाई, नियम तोड़ने वाली 4 गाड़ियां जब्त

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। स्कूली बच्चों की सुरक्षा को लेकर क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी अनपा खान ने सड़क पर उतरकर स्कूली वाहनों का निरीक्षण किया। इस दौरान कई हैरान करने वाली लापरवाहियां सामने आईं। 18 वाहनों पर कार्रवाई की गई है। इनमें से 4 वाहनों को जब्त किया गया है।

निरीक्षण में पाया गया कि अनेक स्कूल बसें, वैन, मैजिक और ऑटो नियमों की अनदेखी कर रहे थे। कई वाहनों में क्षमता से अधिक बच्चे भरे गए थे। कुछ में फर्स्ट एड किट और अग्निशमन यंत्र तक नहीं मिले। कई ड्राइवर्स के पास आवश्यक दस्तावेज भी अधूरे या मौजूद नहीं थे। इन सभी खामियों को देखते हुए आरटीओ ने तुरंत कार्रवाई की। उन्होंने नियम तोड़ने वाले 14 वाहनों के चालान काटे और 4 गाड़ियों को मौके पर ही जब्त कर लिया।

जब्त वाहनों में छोटे-छोटे स्कूली बच्चों को असहज हालत में देखकर आरटीओ का मानवीय पक्ष सामने आया। उन्होंने बच्चों को अपनी सरकारी गाड़ी से उनके घर तक सुरक्षित पहुंचाया। इसके बाद वे खुद एक जब्त कबाड़नुमा वाहन में बैठकर 30 किलोमीटर का सफर तय करके ऑफिस वापस लौटीं। इस पूरे घटनाक्रम का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। लोग आरटीओ अनपा खान के इस कार्य की जमकर सराहना कर रहे हैं। बच्चों ने भी उन्हें धन्यवाद दिया।

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी वनस्पति विभाग में किया पौधरोपण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। शासकीय कन्या महाविद्यालय सीधी के वनस्पति विभाग में प्रायोगिक परीक्षा के उपरान्त मुख्य अतिथि एवं बाह्य प्रायोगिक परीक्षक डॉ. आई.पी. प्रजापति प्राचार्य (शास. महाविद्यालय मड़वास) प्रो. ओ. पी. नामदेव प्राचार्य कन्या कॉलेज सीधी एवं बी एस सी चतुर्थ वर्ष की छात्राओं के द्वारा नए भवन में पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि सभी छात्राओं को एक - एक पौधा लगाना चाहिए जिससे जैवविविधता की सन्तुलन बनी रहे।

इस दौरान वनस्पति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिलेश वर्मा, सह. प्राध्यापक डॉ. रावेंद्र यादव, राजकुमार बैंस, ध्रुवराज वर्मा एवं समस्त छात्राएं उपस्थित रहे।

पटेहरा खुर्द और तेगवा में हरियाली यात्रा कार्यक्रम आयोजित

शासन की हर एक योजना से जन-जन को जोड़ रहा जन अभियान: देव कुमार सिंह

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। हरियाली यात्रा के अवसर पर मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के द्वारा संचालित नवांकुर सखी कार्यक्रम में कलश यात्रा का शुभारंभ करते हुए समाजसेवी देव कुमार सिंह चौहान ने कहा कि मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद् मुख्यमंत्री जी के द्वारा चलाए गए समस्त जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य चला आ रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए कलश यात्रा एवं माता और बहनों को पर्यावरण से जोड़ने के लिए आज का कार्यक्रम नींव का पत्थर साबित होगा। चौफाल सेक्टर के अंतर्गत पटेहरा खुर्द एवं बरमबाबा सेक्टर के अंतर्गत आदर्श ग्राम तेगवा में दिनांक 28 जुलाई 2025 को हरियाली यात्रा के साथ ही 1100 पौधे वितरित करने का कार्य जन अभियान परिषद के द्वारा किया गया। आदर्श ग्राम तेगवा में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जनपद अध्यक्ष सीधी धर्मेंद्र सिंह परिहार के द्वारा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्राप्त 11 पौधों का संरक्षण कर उनका पालन पोषण कर बड़ा करने की शपथ दिलाई गई तथा आदिवासी बाहुल्य ग्राम में इतने बड़े आयोजन की प्रशंसा की गई। उपरोक्त दोनों कार्यक्रम में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के साशी निकाय सदस्य श्री कृष्णकांत द्विवेदी के साथ ही सुश्री पूजा सिंह कुशराम एवं जिला समन्वयक मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद की उपस्थित रहे। दिनांक 28 जुलाई 2025 को सीधी जिले के पांच विकास खंड में इसी प्रकार के पांच कार्यक्रमों का आयोजन कर 5500 पौधों का वितरण किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम 30 जुलाई तक करने का लक्ष्य रखा गया है।

एनडीपीयस अधिनियम का आरोपी दीपक पटेल विशेष न्यायालय एनडीपीएस रीवा द्वारा किया गया दोषमुक्त

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अभियोजन कहानी के अनुसार वर्ष 2019 में मनगवा पुलिस थाना द्वारा आरोपी दीपक पटेल के कब्जे की कार को अभिरक्षा में लेकर 1700 सीसी कोरेक्स जप्त किया गया और आरोपी को गिरफ्तार किया गया और कार को जप्त किया गया तथा आरोपी के खिलाफ पुलिस थाना मनगवा में अपराध क्रमांक 580/2019 में अपराध अंतर्गत धारा 21,22 एनडीपीएस और 5 एवम 13 ड्रग्स और कॉस्मेटिक एक्ट के अंतर्गत अपराध पंजीवध किया गया और मामले का विचारण विशेष न्यायाधीश एनडीपीएस सुधीर सिंह ठाकुर द्वारा किया गया अभियोजन अपना मामला आरोपी के खिलाफ साबित करने में असफल रहा तत्पश्चात आरोपी को एनडीपीएस के आरोप से दोषमुक्त घोषित किया गया, आरोपी दीपक पटेल की ओर से पैरवी अधिवक्ता राजीव सिंह परिहार (शेरा सिंह) ने की ।

संपादकीय

5 हजार सरकारी स्कूल बंद करके, विश्व गुरु बनेगा भारत?

उत्तर प्रदेश में 5000 सरकारी स्कूलों को बंद करने के खिलाफ हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की गई है। याचिका में कहा गया कि सरकार के इस कदम से राज्य में तीन लाख पचास हजार से ज्यादा छात्रों को निजी स्कूलों में दाखिला लेने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की नींव होती है। एक मजबूत शिक्षा प्रणाली एक कुशल कार्यबल, नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है। चूँकि इस देश में प्राथमिक शिक्षा को राजनीतिक एजेंडे में कोई प्राथमिकता नहीं दी जाती, इसलिए दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला यह देश अभी भी निरक्षरता और खराब शिक्षा से जूझ रहा है। हाल ही में प्रकाशित आठवीं इंडिया स्किल रिपोर्ट के अनुसार, ऐसे देश में, जहाँ धर्म और धार्मिक पहचान जनता और सरकार दोनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं, 50 प्रतिशत से ज़्यादा स्नातकों का रोज़गार के योग्य न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस साल फरवरी में केंद्र सरकार ने बताया था कि पिछले 10 साल में यूनेस्को में 89 हजार सरकारी स्कूल बंद हो गए हैं। इनमें से अधिकांश 25 हज़ार स्कूल अकेले उत्तर प्रदेश से थे। 5 हजार स्कूल और बंद हमारे दिल पर मोर लोड ना आए इसलिए योगी सरकार ने स्कूल बंद करने की इस स्कॉच को नाम दिया है पेअरिंग स्कॉच। वर्ष 2015-16 में उत्तर प्रदेश में करीब 1 लाख 62 हजार प्राथमिक विद्यालय थे। जो साल 2021-22 में 1 लाख 40 हजार ही रह गए। यानी 2015-16 के मुकाबले में ये संख्या कम हो गई। सरकार का तर्क है कि जिन स्कूलों में बच्चों की संख्या 50 से कम है, उन्हें बंद कर देना ही बेहतर है। लेकिन सवाल ये है कि आखिर ये स्कॉटिश बच्चे क्यों नहीं हैं? क्या बच्चों की संख्या आपके-आप कम हो गई, या इसके पीछे सरकार की नीतियां जिम्मेदार हैं? ईटीवी-भारत न्यूज़ वेबसाइट के अनुसार यू-डीआईएसई पोर्टल के आधार पर जो आंकड़े सामने आए हैं, वो देखने वाले हैं। आंकड़ों के मुताबिक, प्रदेश में करीब 30,000 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय ऐसे हैं, जो जर्जर स्थिति में हैं। जहां 742 स्कूल पूरी तरह से खराब खंडहर हैं। इसके बाद 690-690 में जंगल और जंगल में 674, ग़रीब में 643, 641 में ग़रीब में और 633 में बलिया में कब्ज़ा की स्थिति बेहद खस्ता है। इन स्कूलों में बच्चों के लिए न तो अधूरा निर्माण है, न शौचालय, न पीने का पानी और न ही चारदीवारी। कभी मिड-डे मील का सामान नहीं आता, तो कभी छत टपकती है। स्थानीय बिजली नहीं। कभी-कभी स्कूल में ही जूते डूब जाते हैं। तो ऐसे रसोई में किसी ने भी अपने बच्चों को क्यों भेजेगा? जब स्कूल में टीचर ही नहीं होंगे तो पढ़ाई कैसे होगी? जिन शिक्षकों में शिक्षक तैनात हैं, वहां उनकी ड्यूटी चुनाव, सर्वेक्षण, योजना या धार्मिक आयोजनों में लगाई जाती है। स्कूल सिर्फ रिकॉर्ड में है। क्लासरूम बंद होता है, परिसर सूना रहता है। फिर जब बच्चों की पढ़ाई नहीं होती, तो परिवार वाले अपने बच्चों को या तो प्राइवेट स्कूलों में दाल देते हैं या फिर पढ़ाई ही छुड़वा देते हैं। यानी धीरे-धीरे सरकारी स्कूल के बच्चे आना ही बंद कर देते हैं। फिर एक दिन शासन की रिपोर्ट आती है छात्र संख्या कम है, स्कूल बंद कर दिया जाएगा। बाकी जो स्कूल चल रहे हैं उनमें भी बार-बार सुरक्षा के नाम पर छुट्टियाँ घोषित कर दी जाती है। उत्तर प्रदेश में कांवड़ यात्रा अब बस एक धार्मिक परंपरा नहीं रही, ये एक सरकारी आयोजन संस्था बन चुकी है। हर साल जैसे ही सावन आता है, प्रदेश का पूरा सरकारी तंत्र एक ही दिशा में दौड़ता है- तीर्थयात्रियों की सेवा। स्वास्थ्य विभाग से लेकर जिला प्रशासन तक, स्वास्थ्य विभाग से लेकर नगर निगम तक, हर विभाग को आदेश दिया जाता है कि 卐कांवड़ियों की सुविधा में कोई कमी नहीं होनी चाहिए।卐 जगह-जगह कैंप, मेडिकल कैंप, मोबाइल स्टेडियम, मिस्ट फैन, नमक-पानी तक डाला जाता है।

मनसा का मातम : अफवाह बनी त्रासदी की वजह

ललित गर्ग

हरिद्वार के प्रसिद्ध मनसा देवी मंदिर में बिजली का तार टूटने और करंट फैलने की एक अफवाह ने कई जानें ले लीं, जिसने धार्मिक स्थलों पर भीड़ प्रबंधन की गंभीर खामियों को उजागर कर दिया है। किसी धार्मिक स्थल पर भगदड़ की यह पहली घटना नहीं, लेकिन अफसोस है कि पुरानी गलतियों से सबक नहीं लिया जा रहा। ऐसी त्रासद, विडबनापूर्ण एवं दुखद घटनाओं के लिये मन्दिर प्रशासन और सरकारी प्रशासन जिमेदार है, रविवार की सुबह एक बार फिर श्रद्धालुओं के लिये मौत का मातम बनी, चीख, पुकार और दर्द का मंजर बना। लगभग साढ़े आठ से नौ बजे के बीच हजारों श्रद्धालु संकीर्ण सीढ़ीदार मार्ग से मंदिर की ओर बढ़ रहे थे। जैसे ही अचानक करंट लगने की अफवाह ने अफरा-तफरी का माहौल बनाया, श्रद्धालु घबराहट में एक-दूसरे पर गिरने लगे और कुछ ही पलों में आठ लोगों की मौत हो गई जबकि करीब तीस श्रद्धालु घायल हो गए, जिनमें कई की हालत गंभीर थी।

भगदड़ में लोगों की जो दुखद मृत्यु हुई, उसका दर्द समूचा देश महसूस कर रहा है। प्रश्न है कि पुलिस का बंदोबस्त कहां था? श्रद्धालुओं की मौत एक ऐसा दर्दनाक एवं खौफनाक वाकया है जो सुदीर्घ काल तक पीड़ित और परेशान करेगा। प्रशासन की लापरवाही, अत्यधिक भीड़, निकासी मार्गों की कमी और अव्यवस्थित प्रबंधन ने इस त्रासदी को जन्म दिया। यह घटना कोई अपवाद नहीं है, बल्कि हाल के वर्षों में दुनिया भर में सामने आई ऐसी घटनाओं की कड़ी का नया खौफनाक मामला है, जहां भीड़ नियंत्रण में चूक एवं प्रशासन एवं सत्ता का जनता के प्रति उदासीनता का गंभीर परिणाम एवं त्रासदी का ज्वलंत उदाहरण है। मनसा के मातम, हाहाकार एवं दर्दनाक मंजर ने राज्य की सुरक्षा व्यवस्था की पोल ही नहीं खोली बल्कि सत्ता एवं धार्मिक व्यवस्थाओं के अमानवीय चेहरे को भी बेनकाब किया है। भारत में भीड़ से जुड़े हादसे आम लोगों के जीवन का ग्रास बनते रहे हैं। धार्मिक आयोजनों हो या खेल प्रतियोगिता, राजनीतिक रैली हो या सांस्कृतिक उत्सव लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं, जहाँ भीड़ प्रबंधन की मामूली चूक भयावह त्रासदी में बदलते हुए देखी जाती रही है। उदाहरण के लिये, पिछले एक साल पर नजर दौड़ाएं तो इस तरह के कई दुखद हादसे हो चुके हैं। हाल ही में पुरी में भगदड़ जानलेवा साबित हुई। पिछले साल जुलाई में ही हाथरस में एक धार्मिक आयोजन में मची भगदड़ में 121 लोगों की मौत हो गई थी। इस साल जनवरी की शुरुआत में तिरुपति मंदिर में टोकन लेने के लिए हद से ज्यादा श्रद्धालु पहुंच गए और पुलिस उनको काबू नहीं कर सकी। भगदड़ मची तो 6 लोगों की जान चली गई। इसी साल, मौनी अमावस्या पर महाकुंभ में और उसके बाद नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भी हादसा हुआ। वर्ष 2013 में मध्य प्रदेश के रत्नागढ़ मंदिर में ढाँचागत कमियों से प्रेरित भगदड़ के कारण 115 लोगों की मौत हो गई थी।

भारत ही नहीं दुनिया में धार्मिक आयोजनों में भीड़ प्रबंधन हमेशा से बड़ी चुनौती बनता रहा है। वर्ष 2022 में दक्षिण कोरिया के इटावन हैलोवीन समारोह में अत्यधिक भीड़ के कारण 150 से अधिक लोगों की जान चली गई थी। इसी तरह, वर्ष 2015 में मक्का में हज के दौरान मची भगदड़ में सैकड़ों लोगों की मौत हो गई थी। आग, भूकंप, या आतंकी हमलों जैसी आपातकालीन स्थितियों में भी भीड़ प्रबंधन की पौल खुलती रही है। आखिर दुनिया के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश में हम भीड़ प्रबंधन को लेकर इतने उदासीन क्यों है? बड़े आयोजनों-भीड़ के आयोजनों में भीड़ बाधाओं को दूर करने के लिए, भीड़ प्रबंधन के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार, सुरक्षाकर्मियों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करना, जन जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करना अब नितान्त आवश्यक है। हर बार जांच, कठोर कार्रवाई करने, सबक सीखने की बातें की जाती हैं, लेकिन नतीजा के ढाक के तीन पात वाला है। न तो शासन-प्रशासन कोई सबक सीख रहा है और न ही आम जनता संयम एवं अनुशासन का परिचय देने की आवश्यकता समझ रही है। भगदड़ की घटनाओं का सिलसिला कायम रहने से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की बदनामी भी होती है, क्योंकि इन घटनाओं से यही संदेश जाता है कि भारत का शासन-प्रशासन भगदड़ रोकने में पूरी तरह नाकाम है। सार्वजनिक स्थलों पर भगदड़ की घटनाएं दुनिया के अन्य देशों में भी होती है, लेकिन उतनी नहीं जितनी अपने देश में होती ही रहती हैं। क्या इस तरह की अफवाह को रोका नहीं जा सकता था? हमारा प्रशासन कोई अनुमान लगाने में इतना अक्षम क्यों है? क्या इसका कारण उसकी संवेदनहीनता है अथवा यह कि संबंधित अधिकारी यह जानते हैं कि कैसी भी घटना हो जाए, उनका कुछ नहीं बिगड़ने वाला। आखिर हम दुनिया के अन्य देशों से कोई सबक सीखने के लिए तैयार क्यों नहीं हैं? सबसे बड़ा सवाल है कि क्या धार्मिक स्थलों पर भीड़ प्रबंधन की कोई ठोस और वैज्ञानिक व्यवस्था है? मनसा देवी मंदिर की सीढ़ियां, संकरे रास्ते और अव्यवस्थित दुकानों के बीच का क्षेत्र लंबे समय से भीड़भाड़ के लिए जाना जाता है। फिर भी वहां कोई स्थायी सुरक्षा उपाय क्यों नहीं किए गए? अफवाह पर नियंत्रण के लिए कोई त्वरित सूचना तंत्र नहीं था, न ही भीड़ को दिशा देने के लिए पर्याप्त पुलिस बल या मार्गदर्शन की व्यवस्था थी। इस तरह की घटनाएं केवल अफवाह का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि यह व्यवस्था की कमजोरियों एवं कोताही का परिणाम होती हैं। तीर्थस्थलों पर नियंत्रित प्रवेश, डिजिटल टिकटिंग, सीसीटीवी निगरानी, आपातकालीन निकासी मार्ग, और स्थानीय प्रशासन की सक्रिय मौजूदगी जैसी व्यवस्थाएं अनिवार्य होनी चाहिए। सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि भगदड़ की घटनाएं लगभग वैसे ही कारणों से रह रहकर होती रहती हैं, जैसे पहले हो चुकी होती हैं।

मृतकों में उत्तर प्रदेश, बिहार और उत्तराखंड के लोग शामिल थे। उनमें छह वर्षीय बच्चा आरुष, किशोर और बुजुर्ग तक शामिल थे। उनके परिवारों पर अचानक दुख का पहाड़ टूट पड़ा। इस दौरान बचे हुए श्रद्धालुओं ने बताया कि भीड़ इतनी घनी थी कि सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था। मनसा देवी मंदिर की यह घटना हमें याद दिलाती है कि भीड़ सिर्फ भक्ति का प्रतीक नहीं है, बल्कि अगर उसे सही दिशा और सुरक्षा नहीं दी जाए तो वह भयावह त्रासदी में बदल सकती है। यह समय है कि प्रशासन, मंदिर ट्रस्ट और समाज मिलकर ठोस कदम उठाएं ताकि आस्था के केंद्र जीवन के लिए खतरा न बनें। तमाम धार्मिक स्थलों पर फैली अव्यवस्था को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। फिसलन भरे रास्ते, संकरी जगह, आने-जाने का एक ही मार्ग जैसी बातें लगभग हर जगह देखने को मिल जाएंगी। ऐसे में जब किसी खास मौके पर भीड़ बढ़ती है तो स्वाभाविक ही हादसे की आशंका भी बढ़ जाती है, जैसा सावन पर मनसा देवी में हुआ। बेंगलुरु में आरसीबी के इवेंट में हुए हादसे के बाद कर्नाटक सरकार क्राउड कंट्रोल पर एक बिल लेकर आई है, जिसमें जिम्मेदारियां तय की गई हैं। ऐसे कानून की हर जगह जरूरत है। रेलवे स्टेशन, मंदिर और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भीड़ को संभालने के लिए पर्याप्त जगह और रास्ते नहीं हैं। कुछ स्थानों पर निकास मार्ग सीमित हैं या अनुपयुक्त हैं, जो भगदड़ का खतरा बढ़ाते हैं। भीड़ प्रबंधन के लिए पर्याप्त प्रशिक्षित एवं दक्ष सुरक्षाकर्मी नहीं हैं, जिससे सुरक्षा चूक होने की संभावना बढ़ जाती है।

ट्रम्प प्रशासन भारतीय दर्शन को अपनाकर वैश्विक समस्याओं का हल निकाल सकते हैं

प्रह्लाद सबनानी

वैश्विक स्तर पर आज की आर्थिक परिस्थितियों के बीच भारत का प्राचीन आर्थिक दर्शन संभवतः आशा की किरण के रूप में दिखाई पड़ता है। अमेरिका जैसा शक्तिशाली देश, अपने अहंकार के मद में, जब अपने पड़ौसी देशों एवं हितचिंतक देशों के साथ ही अन्य अविकसित एवं विकासशील देशों को भी नहीं बक्श रहा है एवं इन देशों से अमेरिका को होने विभिन्न उत्पादों के निर्यात पर टैरिफ का डंडा चला रहा है, तब भारतीय आर्थिक दर्शन की वसुधैव कुटुंबकम, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय एवं सर्वे भवंतु सुखिन सर्वे संतु निरामयाः जैसी नीतियों की याद सहज रूप से ही आ जाती है। भारतीय आर्थिक दर्शन के अनुसार, अर्थ का अर्जन करना बुरी बात नहीं है परंतु इसका धर्म के अनुसार उपयोग नहीं करना बुरी बात है। ट्रम्प प्रशासन की वर्तमान नीतियों से स्पष्ट झलकता है कि अथाह मात्रा में इकट्ठे किए गए धन का उपयोग विश्व के अन्य देशों को डराने धमकाने के लिए किया जा रहा है। अमेरिका आज कई देशों पर दबाव बनाता हुआ दिख रहा है कि यदि किसी देश ने उसकी शर्तों के अनुरूप अमेरिका के साथ द्विपक्षीय आर्थिक समझौता नहीं किया तो उस देश से होने वाले वस्तुओं के अमेरिका में आयात पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाया जाएगा।

यह सत्य है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान विश्व के कई देश विकास की राह पर तेज गति से आगे बढ़े हैं और आज यह सम्पन्न देशों की श्रेणी में शामिल हो गए हैं। इन देशों के नागरिकों को भौतिक सुख की प्राप्ति तो हुई है परंतु उनके जीवन में मानसिक सुख का पूर्णतः अभाव है। अतः इनके जीवन में संतोष का अभाव है और यह लोग कुंठा की भावना में बहते हुए कुछ इस प्रकार के निर्णय ले रहे हैं जिससे समाज के अन्य लोगों का अहित हो रहा है। पश्चिमी देशों में पूंजीवादी नीतियों के चलते कुछ लोग केवल अपने आर्थिक विकास की ओर पूरा ध्यान केंद्रित किए हुए हैं, समाज के अन्य नागरिकों की स्थिति कैसी है, इस बात पर उनका ध्यान बिलकुल नहीं है। अपने को अधिक धनवान बनाने की प्रक्रिया में वे अपने ही समाज के नागरिकों का अहित करने से भी नहीं चूकते हैं। आज अमेरिका की स्थिति भी लगभग यही है। आज वह पूरे विश्व की चौधराहट प्राप्त करने के प्रयास में कुछ इस प्रकार की नीतियों का अनुपालन करता हुआ दिखाई दे रहा है जो अन्य देशों का नुक्सान कर सकती हैं। परंतु, अन्य देशों को होने वाले नुक्सान के प्रति अमेरिका आज पूर्णतः अनजान सा बना हुआ है। पूरे विश्व की आर्थिक स्थिति डावांडोल होती हुई दिखाई दे रही है। यह सब तब हो रहा है जब विश्व की बहुत बड़ी संख्या में नागरिक भूख, गरीबी एवं बेकारी से त्रस्त है। समाज का एक वर्ग अमीर से और अधिक अमीर हो रहा है तो समाज का दूसरा वर्ग गरीब से और अधिक गरीब हो रहा है। आय की असमानता की खाई निरंतर चौड़ी होती जा रही है। कुल मिलाकर अमेरिका सहित विश्व के कई विकसित देशों के नागरिक आज अपनी आर्थिक तरक्की से संतुष्ट नहीं है एवं भौतिक सुख होने के बावजूद मानसिक बीमारियों से ग्रस्त नजर आ रहे हैं। हिंदू सनातन संस्कृति के अनुसार मनुष्य का इस धरा पर जन्म, परेशनियां झेलने के लिए नहीं हुआ है। बल्कि, इस मानव जीवन को समस्याओं रहित बनाकर, शांतिपूर्ण तरीके से जीने के लिए हुआ है। आज विभिन्न

देशों के नागरिक खाने पीने की वस्तुओं, अच्छे वस्त्रों, बड़े एवं सुविधाजनक निवास स्थान, मनोविनोद के साधनों में वृद्धि, वासना की वृद्धि एवं वासना की संतुष्टि के लिए विभिन्न साधनों में वृद्धि, सुख के लिए उपभोग में वृद्धि जैसे कार्यों पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित किए हुए है। जैसे इस धरा पर जीवन जीने का लक्ष्य यही है। इच्छाओं की पूर्ति सम्भव नहीं है। एक इच्छा की पूर्ति होती है तो दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। यह पूंजीवाद में निहित पश्चिमी विचार है। इस धारणा को और अधिक स्पष्ट करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय श्री गुरुजी (श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) कहते हैं कि 卐पश्चिम के सुख की अवधारणा पूर्णतया प्रकृति जन्य इच्छाओं की संतुष्टि पर केंद्रित है, अतः उनके जीवन स्तर को उठाने का अर्थ भी केवल भौतिक आनंद की वस्तुओं को अधिकाधिक जुटाना है। इससे व्यक्ति अन्य विचारों एवं एषणाओं को छोड़कर केवल इसी में पूर्णतया संलग्न हो जाता है। भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति की इच्छा धन संग्रह को जन्म देती है। अधिकाधिक धन प्राप्ति हेतु शक्ति आवश्यक हो जाती है; किंतु भौतिक सुख की अतृप्त क्षुधा व्यक्ति को अपनी राष्ट्रीय सीमाओं तक ही नहीं रुकने देती। सबल राष्ट्र, राज्य शक्ति के आधार पर दूसरों के दमन व शोषण का भी प्रयास करते हैं। इसमें से संघर्ष व विनाश का जन्म होता है। एक बार यह प्रक्रिया प्रारम्भ हुई कि समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। सभी नैतिक बंधन विच्छिन हो जाते हैं। सामान्य मानवीय संवेदनायें सूख जाती हैं। मनुष्य और पशु में अंतर स्थापित करने वाले मूल्य एवं गुण समाप्त हो जाते हैं।卐 हालांकि उक्त विचार आज से लगभग 65/70 वर्ष पूर्व व्यक्त किए गए थे परंतु यह आज अमेरिका की स्थिति पर सटीक बैठते हैं। 卐मेक अमेरिका ग्रेट अगेन卐 के नारे के साथ सत्ता में आने वाले श्री डानल्ड ट्रम्प आज पूरे विश्व में अराजकता की सत्ता स्थापित करने में लगे हुए हैं। केवल और केवल अमेरिका के आर्थिक हितों को प्राथमिकता देना है, इससे अन्य राष्ट्रों (अविकसित एवं विकासशील देशों सहित) का कितना भी नुक्सान हों परंतु अमेरिकी उद्योगपतियों एवं व्यवसायीयों के हित सुरक्षित रहने चाहिए, उनकी आर्थिक तरक्की होते रहना चाहिए। भारतीय आर्थिक चिंतन पश्चिम के आर्थिक चिंतन के ठीक विपरीत है। हिंदू सनातन संस्कृति के अनुसार, अर्थ एवं भोग को धर्म के अनुसार ही कार्यशील रखना चाहिए। इस संदर्भ में संयम को प्राथमिकता दी गई है। कोई भी कार्य, सीमा के अंदर किया जाय तो उचित होता है। सीमा के बाहर जाकर किया गया कार्य, समाज में अस्थिरता प्रतिपादित कर सकता है। अत्यधिक भोग, भारतीय संस्कृति में निषेध है। अर्थ के अधिक मात्रा में अर्जन पर हालांकि किसी प्रकार का निषेध नहीं है परंतु अर्थ के उपभोग पर जरूर कुछ सीमाएं निर्धारित हैं।

10 हजार का कर्ज बना जानलेवा, बड़े भाई की हत्या, छोटा भाई गिरफ्तार

पैसा खर्च करने को लेकर दो भाइयों में खूनी संघर्ष

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (निप्र)। जिले के पाकजाम गांव में खेती के लिए बड़े भाई द्वारा लिए गए 10 हजार रुपए का बैंक कर्ज जानलेवा बन गया। दोनों भाइयों के बीच कर्ज की रकम को खर्च करने को लेकर विवाद हो गया तो छोटे भाई ने बीती रात बड़े भाई पर जलती हुई लकड़ी से वार कर दिया। गंभीर रूप से घायल बड़े भाई को रात करीब 3 बजे अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में दाखिल किया गया, इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मामला दरिमा थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, पाकजाम निवासी नईहर साय (36 वर्ष) ने कुछ दिन पहले खेती के काम के लिए बैंक से 10 हजार रुपए का केसीसी लोन लिया था। इस राशि को उसने अपने सबसे छोटे भाई संजय साय (30) को दे दिया था।उनके तीन भाइयों में नईहर साय सबसे बड़ा और संजय सबसे छोटा है। रोपाई का काम सोमवार को खत्म हो गया था।

देर रात विवाद, बड़े भाई पर जानलेवा हमला: नईहर साय ने बीती रात करीब 10 बजे खाना खाने के दौरान संजय साय से 10 हजार रुपए के खर्च का हिसाब मांगा। इसे लेकर दोनों भाइयों के बीच विवाद हो गया। दोनों के बीच विवाद इतना बढ़ गया कि नौबत मारपीट तक आ गई। विवाद से गुस्साए संजय ने जलती हुई लकड़ी से बड़े भाई नईहर के सिर के पिछले हिस्से पर वार कर दिया और भाग निकला। लकड़ी के वार से नईहर बेहोश होकर गिर गया। परिजनों ने उसके चेहरे पर पानी डाला और उसे उठाने की कोशिश की। काफी कोशिश के बाद भी नईहर नहीं उठा तो परिजन देर रात करीब 3 बजे उसे लेकर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल पहुंचे। इलाज शुरू करने के साथ ही नईहर साय की मौत हो गई।

फरार छोटा भाई गिरफ्तार: मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में मंगलवार को नईहर साय के शव का पोस्टमॉर्टम किया गया और शव को परिजनों को सौंप दिया गया। प्राइमरी ओपिनियन में डॉक्टर ने ब्रेन हेमरेज से नईहर साय की मौत होना बताया। दरिमा पुलिस ने मामले में संजय के खिलाफ हत्या का अपराध दर्ज कर लिया है। दरिमा थाना प्रभारी मनोज कुमार प्रजापति ने बताया कि आरोपी संजय साय को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। उससे पूछताछ की जा रही है। मृतक नईहर साय के परिजनों ने बताया कि आरोपी संजय साय की शादी नहीं हुई है और वह भाइयों और माता-पिता के साथ घर में रहता है। परिवार खेती का काम करता है। घटना से परिवार के सदस्य सदमे में है।

डीएसपी के परिवार का बहिष्कार, इंटरकास्ट मैरिज करने पर आदिवासी कंवर समाज ने दी सजा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। तंवर समाज के लोगों के डीएसपी और उसके परिवार के लोगों का बहिष्कार करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि डीएसपी के इंटरकास्ट मैरिज करने पर उसके परिवार के लोगों का समाज के अध्यक्ष सहित अन्य सदस्य प्रताड़ित कर रहे हैं। इस मामले की शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। मामला कोटा थाना क्षेत्र का है। मूलत: ग्राम नुनेरा निवासी डॉ. मेखलेंद्र प्रताप सिंह पुलिस विभाग में डीएसपी के पद पर पदस्थ हैं। वो सकरी आसमा सिटी में रहते हैं। परिवार के सदस्य गृह ग्राम में रहते हैं। जिसमें भाई-बहन शामिल हैं। उन्होंने सरगुजा के नान दमाली की लड़की से शादी की है।

इंटरकास्ट मैरिज करने पर समाज ने दी सजा: डीएसपी मेखलेन्द्र प्रताप सिंह वर्तमान में सरगुजा संभाग में पदस्थ हैं। उन्होंने इंटरकास्ट मैरिज किया है। शादी के बाद सतगढ़ तंवर समाज के अध्यक्ष सहित पदाधिकारियों ने बैठक बुलाई, जिसके बाद उनके और परिवार का बहिष्कार कर दिया।

समाज ने बनाई है अपनी नियमावली: सतगढ़ तंवर समाज ने दंड विधान एवं नियमावली बनाई है, जिसके पृष्ठ क्रमांक 5 दंड विधान प्रारूप-1 में सामाजिक अपराध खंड (व) उपखंड 2 में इंटरकास्ट मैरिज को अपराधिक कृत्य बताया गया है। बैठक में तय किया गया कि डॉ. सिंह ने सामाजिक नियमों के विरुद्ध अंतरजातीय विवाह कर अपने आप को सतगढ़ तंवर समाज से अलग कर चुके हैं। इस आधार पर केन्द्रीय एवं शाखा कार्यकारिणी की मौजूदगी में प्रस्ताव पारित कर उन्हें समाज से अलग मानने और भविष्य में किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में सम्मिलित न करने का निर्णय लिया गया।

हॉस्टल वार्डन की नौकरी लगवाने 20 लाख ठगे, मंत्रालय के चपरासी ने खुद को बताया क्लर्क

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। हॉस्टल वार्डन की नौकरी लगवाने के बहाने ठगी की गई है। मंत्रालय के संविदा चपरासी ने खुद को क्लर्क बताकर साढ़े 20 लाख रुपए वसूल कर लिए। आरोपी ने पीड़ित युवकों से कहा कि, उसके अधिकारियों तक पहुंच है नौकरी कन्फर्म हो जाएगी। इस मामले में शिकायत मिलने के बाद पुलिस जांच में जुट गई है। यह पूरा मामला टिकरापारा थाना क्षेत्र का है।

टिकरापारा थाना प्रभारी विनय सिंह ने बताया कि जनक कुमार साहू निवासी भाठागांव रायपुर ने शिकायत दर्ज करवाई है। जिसमें बताया कि 2 साल पहले अक्टूबर 2023 में उसकी मुलाकात दधीबल सिंह उर्फ डेविड तिग्गा से हुई थी। डेविड ने उसे कहा कि वह इंद्रावती भवन मंत्रालय में क्लर्क के पद पर है। उसका बड़े-बड़े अधिकारियों से जान पहचान है। वह सरकारी नौकरी लगवाता है।

आदिम जाति विभाग में निकली थी भर्ती: उस दौरान आदिम जाति अनुसूचित विभाग ने हॉस्टल वार्डन के लिए 300 पदों में भर्ती निकली थी। डेविड ने जनक से कहा कि वह हॉस्टल वार्डन की नौकरी लगवा देगा। इसके बदले 11 लाख रुपए लगेंगे। जनक ने अपने एक दोस्त संजय चौहान की भी नौकरी लगवाने की बात की। सौदा 20 लाख 50 हजार में तय हुआ। जिसमें डेविड ने कहा कि नौकरी कन्फर्म हो जाएगी।

बैंक के माध्यम से दिए रुपए: नौकरी पाने के लालच में जनक और संजय ने बैंक खातों के माध्यम से डेविड के अकाउंट में रुपए भेज दिए।

सड़क-नाली, बिजली-पानी जैसी समस्याओं से घिरे विधायक

जन-चौपाल में लोगों ने गिनाई समस्याएं, अमर अग्रवाल ने कहा- विकास में बने सहभागी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। भाजपा ने नगर निगम के समन्वय से जन चौपाल शुरू किया है। सोमवार को नगर विधायक अमर अग्रवाल कई वार्डों में पहुंचे और जनसंवाद कर लोगों से समन्वय स्थापित किया। लेकिन, इस दौरान उन्हें लोगों ने सड़क, नाली, बिजली, पानी और बारिश में जलभराव जैसी समस्याओं को लेकर घेर लिया। हालांकि, उन्होंने समस्याओं को सुनने के बाद उसे दूर करने का भरोसा दिलाया। इसके साथ ही लोगों को जागरूकता का पाठ पढ़ाते हुए उन्हें अपनी जिम्मेदारी बताई। दरअसल, भाजपा ने अलग-अलग वार्डों में जन चौपाल लगाकर विधायकों को क्षेत्र में जाकर केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं को लोगों तक पहुंचाने के साथ ही उनकी समस्याएं सुनने का फरमान जारी किया है। इस आयोजन का उद्देश्य आम नागरिकों से सीधा संवाद स्थापित करना, उनकी क्षेत्रीय समस्याओं को सुनना और त्वरित समाधान की दिशा में कार्य करना रहा।

लोगों ने गिनाई समस्याएं, कहा- शहर की सड़कें जर्जर: जन चौपाल की शुरुआत सुबह 11 बजे हुई, जिसमें विधायक अमर अग्रवाल पहुंचे। इस दौरान लोगों ने बारिश में जलभराव से लेकर बिजली, सड़क, नाली और पानी जैसी मूलभूत समस्याएं बताई। साथ ही कहा कि सड़कों की बदहाली ऐसी है कि लगातार हादसे हो रहे हैं। नाले नालियों का चौड़ीकरण कराने, जर्जर रोड नालों के मरम्मत कराने, ओमनगर के गीतांजलि इन्क्लेव के विद्युत कनेक्शन को दुरुस्त कराकर ओपन नाली को ढकवाने और जुलाई में जलसंकट को लेकर अपनी बात रखी।

इन मोहल्लों में हुआ आयोजन: जनचौपाल की शुरुआत सुबह 11 बजे विकास नगर से हुई, जिसके बाद नेहरू नगर, विष्णु नगर, तिलक नगर, कस्तूरबा नगर, अयोध्या नगर, गुरुघासीदास नगर और तालापारा सहित कई अन्य वार्डों में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। हर चौपाल में स्थानीय नागरिकों ने जल निकासी, सड़क निर्माण, स्वच्छता, स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था और पेयजल जैसी बुनियादी समस्याएं खुलकर रखीं। इस दौरान विधायक अमर अग्रवाल ने मौके पर मौजूद संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के तत्काल समाधान के लिए निर्देश दिए।

जूनियर एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस एसोसिएशन का धरना प्रदर्शन, कामकाज ठप्प

मीडिया ऑडीटर, बलौदाबाजार (निप्र)। जिले में कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा संघ ने अपनी 17 सूत्रीय मांगों को लेकर जिला स्तरीय धरना दिया है। गार्डन चौक पर तहसीलदारों और नायब तहसीलदारों ने प्रशासन पर दबाव बनाने के लिए धरना प्रदर्शन किया। इस हड़ताल से जमीन संबंधी दस्तावेज, छात्रों के आय, जाति और निवास प्रमाणपत्रों का कार्य प्रभावित हो रहा है। संघ के जिलाध्यक्ष पेखन टोंड्रे ने बताया कि उन्होंने कलेक्टर के माध्यम से शासन को अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा था। लेकिन कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर धरना देना पड़ा। उनकी प्रमुख मांगों में पदोन्नति में 50-50 प्रतिशत का कोटा शामिल है। नायब तहसीलदारों को राजपत्रित अधिकारी का दर्जा और कार्यालयीन सुविधाओं का विस्तार भी मांगों में है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने जल्द समाधान नहीं निकाला, तो यह आंदोलन अनिश्चितकालीन हो सकता है।

राजस्व मंत्री ने अपनाया बातचीत का रास्ता: राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा ने इस मामले पर संवाद का रुख अपनाया है। उन्होंने कहा कि संघ की मांगें बड़ी नहीं हैं और बातचीत से सुलझाया जा सकता है। उन्होंने पदोन्नति के मुद्दे पर सहमति जताई है। लेकिन पटवारियों के तबादले के संबंध में स्पष्ट किया कि यह कलेक्टर का विवेकाधिकार है। इस हड़ताल के कारण जिले में प्रशासनिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न हुआ है। आम नागरिकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। अब देखना यह है कि सरकार और संघ के बीच बातचीत से जल्द कोई समाधान निकलेगा या नहीं।

रिटायर्ड-जीएम को डिजिटल-अरेस्ट कर 2.83 करोड़ ठगे

दुबई से कॉल, कंबोडिया भेजी रकम; फर्जी कंपनियों से भारत ट्रांसफर करवाए रुपए, यूपी से 5 ठग गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। एक महिला को डिजिटल अरेस्ट कर 2 करोड़ 83 लाख रुपए की ठगी की गई। महिला प्राइवेट कंपनी में जनरल मैनेजर के पोस्ट से रिटायर हुई है। पुलिस ने सोमवार को उत्तर प्रदेश से 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ठगों ने रुपए ट्रांसफर करने 40 से ज्यादा फर्जी कंपनी बनाई थी। आरोपियों के खातों में 43 लाख रुपए होल्ड कराए गए हैं। मामला विधानसभा थाना क्षेत्र का है। पीड़िता सोनिया हंसपाल ने शिकायत दर्ज कराई थी कि, अज्ञात मोबाइल नंबरों से कॉल कर आरोपियों ने खुद को दिल्ली साइबर विंग का अधिकारी बताया था। उसे धमकाते हुए वॉट्सऐप वीडियो कॉल पर डिजिटल अरेस्ट कर दिया गया। 21 मई से 10 जुलाई 2025 के बीच 2 करोड़ 83 लाख रुपए ट्रांसफर करा लिए।

जांच में सामने आया कि कॉल दुबई से किया गया था। ठगी की रकम यूएस डॉलर में एक्सचेंज कराकर कंबोडिया भेजी गई। जहां से फर्जी कंपनियों के जरिए रुपए वापस भारत भेजे गए। आरोपी आनंद ने ठगी करने के लिए 15 से ज्यादा लोगों को दुबई भेजा है। हर महीने नया सिम कार्ड दुबई भेजा रहा है।

यूपी के 3 जिलों में छापेमारी, 5 आरोपी पकड़ाए: रायपुर एसएसपी लाल उम्मेद सिंह ने बताया कि ऑपरेशन साइबर शील्ड के तहत एक्शन लिया गया। पुलिस ने आरोपियों की लोकेशन उत्तर प्रदेश में लोकेट किया। इसके बाद रायपुर पुलिस की टीम देवरिया, गोरखपुर और लखनऊ जिले में छापेमारी की। 3 जिलों से 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। एसएसपी ने बताया कि, क्र के आरोपियों ने देशभर में ठगी के लिए 40 से ज्यादा फर्जी कंपनियां बनाई थीं।

सेक्स रैकेट कांड में फिर 2 आरोपी गिरफ्तार, स्पा सेंटर की आड़ में चला रहे थे देह व्यापार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (निप्र)। किराए के मकान में सेक्स रैकेट के मामले में फिर 2 आरोपी गिरफ्तार हुए हैं। इनमें से एक आरोपी महिला है। इससे पहले पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया था। आरोपियों के मोबाइल से मिले सबूत के आधार पर ये गिरफ्तारी हुई है। आरोपी स्पा सेंटर की आड़ में ग्राहक लाते थे। फिर किराए के मकान में लड़कियों से देह व्यापार करवाते थे। पुलिस को आरोपियों के मोबाइल के व्हाट्सऐप पर लेनदेन के सबूत भी मिले हैं। यह पूरा मामला पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र का है।

सोमवार को पुलिस ने बोरियाकला निवासी भूपेंद्र उर्फ़ गोपालू सहित एक महिला को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में आरोपियों ने जुर्म कबूल किया है। वहीं आरोपियों के मोबाइल की जांच में सेक्स रैकेट से कनेक्शन भी मिला है।

जानिए पूरा मामला: 23 जुलाई को पुलिस ने एक मुखबिर को पैसे के साथ घर के अंदर भेजा। सेक्स रैकेट की पुष्टि होते ही मुखबिर ने टीम को इशारा किया। जिसके बाद रेड मारी गई।

जोन के झारसुगड़ा-नागपुर तक बिछाई जाएगी चौथी लाइन, 234 करोड़ की लागत से 10.34किमी ट्रैक बिछेगा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (निप्र)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर जोन में हावड़ा-मुंबई रूट पर झारसुगड़ा से लेकर नागपुर तक चौथी लाइन बिछाने की योजना है। इसमें बिलासपुर से झारसुगड़ा के बाद अब बिलासपुर से दाधापारा और दगोरी से निपनिया के बीच 234.27 करोड़ की लागत से 10.34 किमी की चौथी लाइन बिछाई जाएगी।

रेलवे बोर्ड ने इन दोनों प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी है। इस काम के बाद रायपुर से आने वाली ट्रेनों को दोनों सेक्शन में खड़ी नहीं रहनी पड़ेंगी। साथ ही ट्रेनों की स्पीड में और इजाफा हो सकेगा। बता दें कि, झारसुगुड़ा से बिलासपुर तक चौथी लाइन का काम लगभग पूर्णता की ओर है। यह लाइन नागपुर तक बिछाई जानी है।

प्रोजेक्ट में बिलासपुर से रायपुर के बीच 148 किमी चौथी लाइन बिछाई जाएगी। इसके लिए रेलवे बोर्ड से 63 किमी की मंजूरी मिल चुकी है। वहीं 80 किमी की मंजूरी अभी प्रक्रियाधीन है। बोर्ड ने इसी सप्ताह बिलासपुर से दाधापारा और दगोरी से निपनिया के बीच चौथी लाइन मंजूर की है। रेलवे पार्ट-पार्ट में इस पूरे प्रोजेक्ट को मंजूरी दे रहा है।

3.48 किमी लाइन बिछाने में खर्च होंगे 60.94 करोड़: बिलासपुर से दाधापारा के बीच 3.48 किलोमीटर चौथी लाइन पर 60.94 करोड़ रुपए खर्च होंगे। वहीं दगोरी से निपनिया के बीच 6.86 किलोमीटर चौथी लाइन 173.33 करोड़ की लागत से बिछाई जाएगी। दोनों काम एक साथ चलेंगे।

कांवड़ियों के लिए फ्री भोजन और ठहरने की व्यवस्था

रामानुजगंज के पंडित दीनदयाल उपाध्याय मांगलिक भवन पहुंचे स्वास्थ्य मंत्री, सेवा कार्यों की सराहना की

मीडिया ऑडीटर, बलरामपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में बाबा बैजनाथ धाम कांवरिया सेवा समिति की ओर से सावन महीने में झारखंड के बाबा बैजनाथ धाम जाने वाले कांवड़ियों के लिए फ्री भोजन और ठहरने की व्यवस्था की है। यह व्यवस्था पंडित दीनदयाल उपाध्याय मांगलिक भवन में की गई है। मंगलवार को बाबा बैजनाथ धाम जाने के दौरान स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल पत्नी संग वहां पहुंचे। स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की सीमा पर कन्हार नदी के तट पर स्थित रामानुजगंज में सेवा, श्रद्धा, समर्पण भाव से नगर वासियों की ओर से कावड़ यात्रियों की सेवा की जा रही है। जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है।

कांवड़ यात्रियों को मिल रही राहत मिल: उन्होंने कहा कि दूर-दराज गांव और शहर से लोग 200 से 700 किलोमीटर दूरी तय करके रामानुजगंज तक पहुंचते है। यहां पर जिस प्रकार से एक साथ 300 से अधिक लोगों के लिए भोजन और रुकने की प्रतिदिन व्यवस्था की जा रही है। इससे कांवड़ यात्रियों को बहुत राहत मिल रही है और उनके आगे की रास्ता आसान हो रहा है।

उत्साह के साथ कांवड़ यात्री रुक रहे: बाबा बैजनाथ धाम कांवड़ सेवा समिति के प्रमुख और नगर पालिका अध्यक्ष रमन अग्रवाल ने कहा कि नगर वासियों के सहयोग से यहां यह व्यवस्था संचालित हो रही है। हम सब का सौभाग्य है की कावड़ यात्रियों की सेवा का मौका हमें मिल रहा है और उत्साह के साथ कांवड़ यात्री यहां रुक रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री अभय मनोहर सप्रे ने किया ब्लैक स्पॉट्स का निरीक्षण

इन्दौर, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट की सड़क सुरक्षा समिति के अध्यक्ष एवं सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री अभय मनोहर सप्रे ने आज अपने इंदौर प्रवास के दौरान अधिकारियों की बैठक के पश्चात शहर के चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स का निरीक्षण किया। उन्होंने ब्लैक स्पॉट्स पर चल रहे सुधार के कार्यों और ब्लैक स्पॉट्स को समाप्त करने के कार्यों को देखा तथा चल रहे कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने बायपास पर निर्माणाधीन ओव्हर ब्रिजों के निर्माण को भी शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने सड़कों की मरम्मत, गड्ढों को तुरंत भरने और अतिक्रमण हटाने के निर्देश भी दिये।

न्यायमूर्ति श्री सप्रे ने अपने भ्रमण की शुरूआत तेजाजी नगर ब्लैक स्पॉट्स से की। यहां उन्होंने दुर्घटनाओं , मृतकों की संख्या, दुर्घटनाओं के कारण आदि की जानकारी ली। उन्होंने यहां अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि यहां ब्लैक स्पॉट समाप्त करने के कार्य तेज गति से पूरे किये जाये। इसके पश्चात वे रालामण्डल, बेस्ट प्राइज के सामने बन रहे ओव्हर ब्रिज के समीप ब्लैक स्पॉट के निरीक्षण के लिये पहुंचे। उन्होंने उक्त दोनों ब्रिजों के निर्माण को गति के साथ पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने सर्विस रोड के सुधार के लिये निर्देशित किया। उन्होंने सड़कों की तुरंत मरम्मत, सड़कों के निर्माण में समय सीमा और गुणवत्ता का ध्यान रखने आदि के संबंध में भी अधिकारियों को निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि सड़कों की मरम्मत गुणवत्तापूर्ण हो, यह सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने कहा कि सड़कों की मरम्मत तुरंत करायी जाये। आवश्यक सुधार के कार्य भी तत्काल किये जाये। सड़कों के निर्माण का मूल्यांकन कराया जाये। लापरवाही पाये जाने पर संबंधित ठेकेदारों के विरूद्ध कार्रवाई की जाये।

आबकारी विभाग इंदौर द्वारा अवैध मदिरा के विरुद्ध की गई प्रभावी कार्रवाई

इन्दौर, (एजेंसी)। कलेक्टर आशीष सिंह के निर्देशन एवं सहायक आयुक्त आबकारी अभिषेक तिवारी के मार्गदर्शन में आबकारी विभाग इंदौर द्वारा अवैध मदिरा के परिवहन और विक्रय के विरुद्ध दो महत्वपूर्ण कार्यवाहियाँ कर कुल 4 लाख रूपये से अधिक मूल्य की मदिरा और वाहन जप्त किए गए।

पहली कार्यवाही में आबकारी उप निरीक्षक श्री आशीष जैन (वृत्त-आंतरिक क्षेत्र क्रमांक 01) के निर्देशन में एक ईऑन कार से कुल 36 बल्क लीटर (2पेटी विदेशी व्हिस्की व 2 पेटी देशी शराब) अवैध मदिरा बरामद की गई। आरोपी पंकज पिता जयसिंह परमार (निवासी देवास) के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किया गया। बरामद मदिरा एवं वाहन का अनुमानित मूल्य 3.30 लाख रूपये आंका गया है।

दूसरी कार्रवाई वृत्त काछी मोहल्ला के उप निरीक्षक श्री भगवानदास अहरवार के नेतृत्व में कुलकर्णी नगर क्षेत्र में की गई, जहाँ एक दोपहिया वाहन से अवैध रूप से ले जाई जा रही 100 पाव देशी मसाला शराब पकड़ी गई। इस प्रकरण में अंकित पिता मिश्रीलाल (निवासी कुलकर्णी नगर) के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया। कुल जप्ती का बाजार मूल्य लगभग 70,500 रूपये है।

इन कार्यवाहियों में श्री देवेश चतुर्वेदी (जिला कंट्रोल रूम प्रभारी), श्री मनोज अग्रवाल व श्री जयसिंह ठाकुर (सहा. जिला आबकारी अधिकारी), उप निरीक्षक श्री सुनील मालवीय, मुख्य आरक्षक श्री बद्रीसिंह जमरा, सीमा भूरिया, आरक्षक श्री विपुल खरे, श्री मुकेश रावत व श्री वीरेंद्र पटेल सहित सम्मिलित टीम का सराहनीय योगदान रहा।

शिक्षक अब बच्चों को सिखाएंगे जीवन कौशल के गुर

बैतूल, (एजेंसी)। जनजातीय कार्य विभाग बैतूल द्वारा मैजिक बस फाउंडेशन, मुंबई के सहयोग से संचालित जीवन कौशल आधारित 'सक्षम'कार्यक्रम के तहत सोमवार को मिडिल स्कूल, संदीपनि एवं विशेष आवासीय विद्यालय के शिक्षकों का एक दिवसीय रिफ्रेशिंग ट्रेनिंग कार्यक्रम शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आठनेर में आयोजित हुआ। जिसमें 63 माध्यमिक शिक्षकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का आयोजन बीआरसी राजेश कुमार आठनेरे, उत्कृष्ट विद्यालय के प्राचार्य श्री आर. के. खाड़े, कन्या शिक्षा परिसर प्राचार्य मदनलाल पटेल , सीएसी श्री भीमराव दवडे के निर्देशन में किया गया, जिसमें ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर श्री मेहरबान सिंह, मीना सातकार, मास्टर ट्रेनर जितेन्द्र वागद्र अतुल कश्यप और के मार्गदर्शन में शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की।

प्रशिक्षण की शुरुआत प्री-टेस्ट से की गई, जिसके पश्चात वर्ष 1 और वर्ष 2 के मॉड्यूल की संरचना एवं मुख्य बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की गई। मास्टर ट्रेनर श्री जितेन्द्र वागद्र ने कार्यक्रम के पूर्व वर्षों की उपलब्धियों और अनुभवों का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण न केवल विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक क्षमता के विकास में सहायक होगा, बल्कि उनके व्यवहार और समझ को भी परिपक्व बनाएगा। प्रशिक्षण में शिक्षकों को जानकारी दी गई कि अब वे विद्यालय में रोचक गतिविधियों और खेल आधारित सत्रों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन कौशल सिखाएंगे। मास्टर ट्रेनर द्वारा वर्ष 2 के जीवन कौशल सत्रों का व्यवहारिक प्रदर्शन कर उपस्थित शिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। मास्टर ट्रेनर अतुल कश्यप ने 'मेरी सीख का कोना, 'सक्षम वॉल'और 'बिहेवियर मैनेजमेंट सिस्टम'जैसे नवाचारों को लागू करने की दिशा में मार्गदर्शन दिया। उन्होंने 11 प्रमुख जीवन कौशलों के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की। ब्लॉक प्रबंधक मीना सातनकर ने जेंडर समानता और बाल संरक्षण की अवधारणाओं पर विशेष सत्र आयोजित किया। उन्होंने बाल दुर्व्यवहार के विभिन्न प्रकारों की जानकारी दी और उसकी रोकथाम के लिए शिक्षकों को सजग भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया इसके बाद पोस्ट भी लिए गया। समापन सत्र में ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर मेहरबान सिंह ने शिक्षकों से अपील की कि जीवन कौशल सत्रों को गुणवत्ता पूर्ण, बालमैत्री वातावरण में संचालित करें और नवाचारों को अपने-अपने विद्यालयों में प्रभावशाली तरीके से क्रियान्वित करें। उन्होंने नियमित रिपोर्टिंग की भी विशेष महत्ता बताई।

आशा कार्यकर्ताओं के लिए विश्राम कक्ष का जिला चिकित्सालय में किया शुभारंभ

बैतूल, (एजेंसी)। जिला चिकित्सालय बैतूल के महिला एवं बाल रोग इकाई के प्रथम तल पर आशा कार्यकर्ताओं के लिए बनाए गए विश्राम कक्ष का सोमवार को भव्य शुभारंभ किया गया। सीएमएचओ डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि आशा विश्राम कक्ष राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन भोपाल म.प्र. के दिशा निर्देशानुसार बनाया गया है। आशा कार्यकर्ता स्वास्थ्य विभाग में जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो क्षेत्र से रेफर हितग्राहियों को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय समय-समय पर लेकर आतीं हैं। कई बार इन्हें परिस्थिति अनुसार रात्रि तक रूकना पड़ता है। आशाओं की सुविधाओं के लिए आशा विश्राम कक्ष बनाया गया है जिसमें आशा कार्यकर्ता आराम कर सकती है।

इस अवसर पर सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक डॉ जगदीश घोरे, आरएमओ डॉ रानू वर्मा, डीसीएम श्री कमलेश मसीह, नर्सिंग ऑफिसर, एपीएम शहरी क्षेत्र एवं आशा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जिले में 1 जून से आज दिनांक 28 जुलाई तक 764.3 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। जिले में 1 जून 2025 से आज दिनांक 28 जुलाई को प्रातः 8 बजे तक जिले में 764.3 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज हुई है। गत वर्ष इसी अवधि में 625.3 मिलीमीटर औसत वर्षा हुई थी। अधीक्षक भू-अभिलेख नर्मदापुरम ने बताया है कि 27 जुलाई से 28 जुलाई 2025 को प्रातः 8 बजे तक तहसील नर्मदापुरम में 2.4 मिलीमीटर, सिवनीमालवा में 13.0 मिलीमीटर, इटारसी में 0.8 मिलीमीटर, माखननगर में 0.0 मिलीमीटर, सोहागपुर में 0.0 मिलीमीटर, पिपरिया में 0.0 मिलीमीटर, बनखेड़ी में 0.0 मिलीमीटर, पचमढ़ी में 9.8 एवं तहसील डोलरिया 0.0 मिलीमीटर वर्षा दर्ज हुई है। अधीक्षक भू-अभिलेख नर्मदापुरम ने बताया है कि वर्तमान में सेठानी घाट का जलस्तर 947.60 फीट है, तवा जलाशय का 1159.10 फीट है, बरगी जलाशय का 420.15 मीटर एवं बारना जलाशय 346.58 मीटर दर्ज किया गया है। उल्लेखनीय है सेठानी घाट का अधिकतम जल भराव 967.00 फीट है, तवा जलाशय का अधिकतम जल भराव 1166.00 फीट है, बरगी जलाशय का जल भराव 422.76 मीटर है तथा बारना जलाशय का अधिकतम जल भराव 348.55 मीटर है।

06 लाख 47 हजार रूपए की प्रशासकीय स्वीकृति जारी

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। विधायक सिवनीमालवा की अनुशंसा पर कलेक्टर सोनिया मीना द्वारा विधायक स्वेच्छानुदान निधि से वि.खं./न.पा. सिवनीमालवा, केसला एवं नर्मदापुरम के 48 हितग्राहियों को 06 लाख 47 हजार रूपए की प्रशासकीय स्वीकृति जारी की गई है। जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय नर्मदपुरम से प्राप्त जानकारी के अनुसार विधायक सिवनीमालवा, श्री प्रेम शंकर वर्मा की अनुशंसा पर वि.खं./न.पा. सिवनीमालवा एवं नर्मदापुरम के 23 हितग्राहियों को अत्यंत गरीब, प्रोत्साहन एवं इलाज के लिए 20-20 हजार रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की है। इसी प्रकार वि.खं./न.पा. सिवनीमालवा एवं केसला के 12 हितग्राहियों को अत्यंत गरीब, प्रोत्साहन एवं इलाज के लिए 10-10 हजार रूपये, वि.खं./न.पा. सिवनीमालवा के 01 हितग्राहियों को इलाज के लिए 07 हजार रूपये, वि.खं./न.पा. सिवनीमालवा, केसला एवं नर्मदापुरम के 12 हितग्राहियों को अत्यंत गरीब, प्रोत्साहन एवं इलाज के लिए 05-05 हजार रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है।

विश्व हैपेटाइटिस दिवस के उपलक्ष्य में स्वास्थ्य शिविर किए गए आयोजित

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। नर्मदापुरम जिले में विश्व हैपेटाइटिस दिवस के उपलक्ष्य में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए। सीएमएचओ डॉ. नरसिंह गेहलोत के दिशानिर्देश में जिला अस्पताल परिसर नर्मदापुरम एवं सिविल अस्पताल इटारसी के ओएसटी केंद्रों पर हैपेटाइटिस जागरूकता एवं स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। स्वास्थ्य शिविर में 128 आईडीयू और 292 कैदियों की हैपेटाइटिस बी एवं सी की जांच की गई। तथा हैपेटाइटिस के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए।

दुग्ध उत्पादन बढ़ाने एवं नस्ल सुधार करने के लिए फीमेल पशुओं के प्रजनन को प्रोत्साहित किया जाए - कमिश्नर

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। नर्मदापुरम संभाग कमिश्नर कृष्ण गोपाल तिवारी ने संभागीय समय सीमा की बैठक में पशु चिकित्सा सेवाएं के संयुक्त संचालक को निर्देश दिए कि वह पशुओं की नस्ल सुधारने एवं दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए पशुओ में फीमेल पशु के प्रजनन को प्रोत्साहित करें। कमिश्नर ने कहा कि शासन द्वारा तत संबंध में योजना भी संचालित है, इस योजना का पशु चिकित्सा विभाग व्यापक प्रचार प्रसार पशु मालिकों तक एवं किसानों तक करे। मात्र ?100 की लागत से लाइफ कॉरपोरेशन से फीमेल सीमन प्राप्त कर फीमेल पशु का जन्म कराया जा सकता है, यह योजना सफल है और अब तक इस योजना के क्रियान्वयन से 57 फीमेल एवं आठ मेल पशु का प्रजनन कराया गया है। कमिश्नर ने कहा कि फीमेल पशुओं के उत्पादन से नस्ल में सुधार तो होगा ही साथ ही दुग्ध उत्पादन को भी बढ़ावा मिलेगा। इसके सफल क्रियान्वयन से पशु मालिक अपने पशुओं को सड़क पर विचरण करने के लिए नहीं छोड़ेंगे। अपितु वह अपने दुधारू पशुओं को घर पर ही रखकर उनकी उचित देखभाल करेंगे। कमिश्नर श्री तिवारी ने नर्मदापुरम जिले एवं संभाग के अन्य जिलों में हो रही लगातार बारिश को देखते हुए फूड

सेफ्टी अधिकारियों को निर्देश दिए की वे अपने-अपने जिले के होटल, रेस्टोरेंट एवं दुकानों में बिकने वाले दूषित खाद्य सामग्री की एवं पदार्थ की जांच करें, उनके सैंपल लेकर प्रयोगशाला में जांच हेतु भेजें। किसी भी स्थिति में दूषित खाद्य सामग्री ना बिकने पाए। उन्होंने 70 से अधिक एवं 70 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड अनिवार्य रूप से बनाने के निर्देश दिए। कमिश्नर ने कहा कि आयुष्मान कार्ड से 5 लाख तक का इलाज चिन्हित अस्पतालों में फ्री में किया जाता है। व्यक्ति आयुष्मान कार्ड का लाभ अनिवार्य रूप से लेवे। उन्होंने जिला पेंशन अधिकारी को निर्देश दिए कि वह सेवानिवृत कर्मचारियों के सभी स्वत्वों का भुगतान समय सीमा में करना सुनिश्चित करें, साथ ही उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह अपने यहां के सेवानिवृत हो रहे कर्मचारियों की जानकारी जिला पेंशन कार्यालय को प्राथमिकता से देना सुनिश्चित करें।

कमिश्नर तिवारी ने एक पेड़ मां के नाम अभियान की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि इस अभियान के तहत अधिक से अधिक पेड़ लगाकर उसकी फोटो लेकर पोर्टल पर अनिवार्य रूप से अपलोड की जाए। उन्होंने मनरेगा अभियान के अंतर्गत संचालित एक बगिया मां के नाम अभियान की भी समीक्षा की और निर्देश दिए की बाग बगीचे में रुचि रखने वाले और जिनके पास एक एकड़ की भूमि है ऐसे व्यक्तियों को चिन्हित कर एक बगिया मां के नाम अभियान के अंतर्गत एक बगिया डेवलेप किया जाए। उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह अपने अधीनस्थ अमलों को निर्देश जारी करें कि वह अपनी सभी फाइलें ई ऑफिस सिस्टम के माध्यम से ही भेजें और सभी फाइलों में पेन से हस्ताक्षर न करके ई साइन या डिजिटल हस्ताक्षर करना सुनिश्चित करें। उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह समय सीमा के प्रकरणों का जवाब ठोस कार्रवाई करके दे, आश्वासन संबंधी जवाब किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं होंगे।

कमिश्नर तिवारी ने आधार ई केवाईसी में अब तक हुई प्रगति की समीक्षा की। जिला खाद एवं नागरिक आपूर्ति अधिकारी ने बताया कि होशंगाबाद में 91 बैतूल में 98 एवं हरदा में 89 प्रतिशत हितग्राहियों के आधार ईकेवाईसी बनाए जा चुके हैं। सभी हितग्राहियों को 3 महीने का एक मुफ्त राशन भी प्रदान कर दिया गया है। जिन हितग्राहियों की ईकेवाईसी नहीं हुई है केवल वही राशन से वंचित है। उन सभी वंचित हितग्राहियों का भी ई केवाईसी कराने का कार्य लगातार जारी है।

कलेक्टर ने नागरिको से जिले को टीबी मुक्त बनाने में सहयोग करने की अपील की

नर्मदापुरम, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत नर्मदापुरम जिले में सभी विकासखण्डों में टीबी स्क्रीनिंग का कार्य किया जा रहा है। इस अभियान के तहत जिले में 306000 लोगों की जांच का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसमें से अब तक 54986 लोगों की टीबी स्क्रीनिंग टीबी स्टाफ, सीएचओ, एएनएम एवं आशा कार्यकर्ता द्वारा की जा चुकी है। सीएमएचओ डॉ. नरसिंह गेहलोत के मार्गदर्शन में सोमवार 28 जुलाई को जिला क्षय केंद्र में 10 टीबी मरीजों को फूड बास्केट प्रदान की गई। इस अवसर पर जिला क्षय अधिकारी, डॉ संजय पुरोहित एमओडीटीसी, विशेष दुबे डीपीसी, हेमन्त अग्रवाल, श्याम वर्मा, चंदा शेख, वर्षा शर्मा सहित एनएचएम कार्यालय का समस्त स्टॉफ उपस्थित रहा। प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत केन्द्रीय जेल, छात्रावासों, रेन बसेरों और अन्य स्लम क्षेत्रों में टीबी स्क्रीनिंग शिविर लगातार आयोजित किए जा रहे हैं। जिले में अब तक 158 निक्षय मित्र बनाए जा चुके हैं, जो टीबी मरीजों को स्वेच्छिक फूड बास्केट वितरण कर रहे हैं। भारत सरकार द्वारा निक्षय पोषण योजना के तहत टीबी मरीजों को 1000 प्रतिमाह डीबीटी के माध्यम से इलाज पूर्ण होने तक दिए जा रहे हैं। कलेक्टर सोनिया मीना एवं सीएमएचओ डॉ. नरसिंह गेहलोत द्वारा टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत 60 वर्ष से अधिक आयुवर्ग नागरिक, सभी डायबिटिक मरीज, सभी धूम्रपान वाले नागरिक, पुराने टीबी मरीज के संपर्कित व्यक्ति जिनका बीएमओ 18 से कम है, साथ ही टीबी के लक्षण जैसे सर्दी जुकाम खाँसी वाले नागरिकों से अपील की गई है कि वे नजदीकी स्वास्थ्य संस्था में जाकर टीबी की स्कीनिंग नि:शुल्क करायें एवं जिले को टीबी मुक्त जिला बनाने में सहयोग करे।

विपणन संघ के भण्डारण केन्द्रों पर मंगलवार को होगा यूरिया का वितरण

हरदा, (एजेंसी)। खरीफ वर्ष 2025 में फसलो के लिए किसानों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए जिले में उर्वरक व्यवस्था हेतु पैक्स समितियों, विपणन संघ व विपणन समिति से यूरिया उर्वरक की व्यवस्था की गई है। जिला विपणन अधिकारी श्री योगेश मालवीय ने बताया कि मंगलवार 29 जुलाई को विपणन संघ गोदाम हरदा, टिमरनी व छीपाबड, विपणन संघ टिमरनी उपकेन्द्र रहटगांव, विपणन समिति हरदा व खिरकिया एवं विपणन समिति उपकेन्द्र सिराली में प्रात = 10 बजे से यूरिया उर्वरक का वितरण किया जायेगा।

सीएम हैल्पलाइन का कोई भी आवेदन नॉन अटेंड नहीं रहना चाहिए-संभागीय आयुक्त श्री खत्री

ग्वालियर, (एजेंसी)। सीएम हैल्पलाइन के तहत दर्ज शिकायतों के निराकरण को अधिकारी सर्वोच्च प्राथमिकता दें। कोई भी शिकायत नॉन अटेंडेंट नहीं रहना चाहिए। शिकायतों का निराकरण संतुष्टिपूर्वक हो यह भी सुनिश्चित किया जाए। संभागीय आयुक्त श्री मनोज खत्री ने मंगलवार को संभागीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक में यह निर्देश दिए।

संभागीय आयुक्त कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित समीक्षा बैठक में सीएम हैल्पलाइन के साथ-साथ विभागीय योजनाओं और कार्यक्रमों की विस्तार से समीक्षा की गई। बैठक में सभी विभागों के संभाग स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे। संभाग आयुक्त श्री मनोज खत्री ने संभागीय अधिकारियों से कहा है कि सीएम हैल्पलाइन के प्रकरणों के निराकरण की नियमित समीक्षा करें। एल-1 स्तर पर कोई भी शिकायत नॉन अटेंड नहीं होना चाहिए। विभागीय अधिकारी संभाग के अन्य जिलों की भी नियमित समीक्षा कर प्रकरणों का निराकरण संतुष्टिपूर्वक कराएं। 50

दिन से अधिक की लंबित शिकायतों का निराकरण विशेष प्रयास कर किया जाए।

संभागीय आयुक्त मनोज खत्री ने बैठक में कृषि विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग व लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की भी विस्तार से समीक्षा की। राजस्व विभाग की समीक्षा के दौरान संभागीय आयुक्त श्री मनोज खत्री ने निर्देश दिए हैं कि राजस्व प्रकरणों का निराकरण राजस्व अधिकारियों की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

इंडिया इंटरनेशनल ज्वेलरी शो से 68,000 करोड़ के कारोबार का लक्ष्य

नई दिल्ली (एजेंसी)। जेम्स एंड ज्वेलरी एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (जीजेईपीसी) ने 30 जुलाई से 4 अगस्त तक मुंबई में आयोजित होने वाले इंडिया इंटरनेशनल ज्वेलरी शो (आईआईजेएस) के माध्यम से 68,000 करोड़ रुपये का कारोबार करने का लक्ष्य तय किया है। परिषद के अनुसार यह अब तक का सबसे बड़ा आयोजन होगा, जिसमें 2,100 कंपनियां और 3,600 स्टॉल शामिल होंगे। शो में भारत के 1,300 शहरों और दुनिया के 80 देशों से 50,000 से अधिक आगंतुकों के पहुंचने की उम्मीद है। जीजेईपीसी खाड़ी देशों में 40,000 करोड़ के नए बाजार अवसरों को भुनाने की भी तैयारी कर रहा है।

स्टोस और लेयर की लंबे डेटिंग के बाद हुई थी शादी

मैनचेस्टर (एजेंसी)। इंग्लैड क्रिकेट टीम के टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स शानदार बल्लेबाज और गेंदबाजी के अलावा अपनी लव मैरिज के लिए भी चर्चित रहे हैं। स्टोक्स ने एक स्कूल टीचर क्लेयर रैटक्लिफ से शादी की है। क्लेयर शादी से पहले से ही से ही स्टोक्स की प्रशंसक थी। स्टोक्स और क्लेयर की पहली मुलाकात साल 2010 में हुई थी। तब स्टोक्स क्रिकेटर के रुप में अपना करियर बनाने का प्रयास कर रहे थे। क्लेयर ने शुरूआत से ही उनका समर्थन किया। लंबी डेटिंग के बाद साल 2013 में स्टोक्स ने क्लेयर को शादी का प्रस्ताव दिया। दोनों ने अक्टूबर 2017 में शादी की। उनकी शादी में जो रूट, जॉस बटलर और ऑयन मॉर्गन भी शामिल हुए थे। इस शादी की तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरन हुई थीं। स्टोक्स और क्लेयर के दो बच्चे भी हैं। क्लेयर भी सोशल मीडिया पर सक्रिय रही हैं और अपने परिवार की तस्वीरें साझा करती रहती हैं। साल 2017 में स्टोक्स कानूनी समस्याओं में फंस गये थे। इस कठिन समय में क्लेयर ने उनका हौंसला बनाये रखा।

बीसीसीआई ने अंतिम टेस्ट के लिए जगदीशन को शामिल किया

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने 31 जुलाई से ओवल में इंग्लैड के खिलाफ होने वाले पांचवे और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच के लिए विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत की जगह पर तमिलनाडु के के एन जगदीशन को शामिल किया है। ऋषभ चोटिल होने के कारण इस सीरीज से बाहर हो गये हैं। उन्हें चौथे टेस्ट के पहले ही दिन पैर के अंगूठे पर गेंद लग गयी थी। जिससे उनका अंगूठा फ्रैक्चर हो गया था। उन्हें इसके बाद छह सप्ताह के आराम के लिए कहा गया है। बीसीसीआई ने कहा ऋषभ पंत, जिन्हें मैनचेस्टर में इंग्लैंड के खिलाफ चौथे टेस्ट के दौरान दाएं पैर में फ्रैक्चर हुआ, उन्हें सीरीज के पांचवें और आखिरी टेस्ट मैच में शामिल नहीं किया गया है। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया के इस बयान में कहा गया, 'बीसीसीआई मेडिकल टीम उनके ठीक होने की प्रक्रिया पर नजर रखेगी और टीम उनकी शीघ्र स्वस्थ होने की उम्मीद करती है।

भारतीय शेयर बाजार मे रही गिरावट

सेंसे स हल्की की गिरावट के साथ 80,800 और निटी 24,678 पर

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार मंगलवार के कारोबारी सत्र में सपाट स्तर पर खुला। सेंसेक्स 38 अंक की गिरावट के साथ 80,842 और निफ्टी 2 अंक की मामूली कमजोरी के साथ 24,678 पर कारोबार कर रहा था। शुरुआती कारोबार में बाजार पर दबाव बनाने का आईटी शेयरों की ओर से किया जा रहा था, जिसके कारण निफ्टी आईटी इंडेक्स 0.33 प्रतिशत की गिरावट के साथ लाल निशान में था। वहीं ऑटो, फार्मा, मेटल, रियल्टी, एनर्जी, प्राइवेट बैंक और इन्फ्रा बाजार को ऊपर खींचने का काम कर रहे थे। लार्जकैप की अपेक्षा मिडकैप और स्मॉलकैप में तेजी देखी जा रही है। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 112 अंक की तेजी के साथ 57,649 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 17.65 अंक की मामूली बढ़त के साथ 18,082 पर कारोबार कर रहा था। सेंसेक्स पैक में ट्रेंट, सन फार्मा, टाटा मोटर्स, कोटक महिंद्रा बैंक, भारती एयरटेल, अदाणी पोर्ट्स, आईटीसी, एमएंडएम, टाटा स्टील, बजाज फाइनेंस, एलएंडटी, एसबीआई और एचसीएल टेक टॉप गेनर्स थे। इटरनल (जोमैटो), बीईएल, टीसीएस, इन्फोसिस, आईसीआईसीआई बैंक, एनटीपीसी, टाइटन, एशियन पेंट्स, पावर ग्रिड और एचडीएफसी बैंक टॉप लूजर्स थे। शेयर बाजार का रुझान तेजी का था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर 1,388 शेयर हरे निशान में और 925 शेयर लाल निशान में थे। बाजार के जानकारों का कहना है कि स्टॉक मार्केट के लिए अभी अनुकूल परिस्थितियों की तुलना में प्रतिकूल परिस्थितियां ज्यादा हैं। बाजारों पर सबसे बड़ा दबाव यह है कि भारत और अमेरिका के बीच अपेक्षित व्यापार समझौता अभी तक नहीं हुआ है और 1 अगस्त की समयसीमा से पहले समझौते की संभावना कम होती जा रही है।

सोने के भाव 97,650 रुपए, चांदी लगभग 1,13,250 रुपए

नई दिल्ली (एजेंसी)। घरेलू बाजार में सोने-चांदी के वायदा कारोबार की शुरुआत में मंगलवार को तेजी देखी जा रही है। मंगलवार के कारोबारी दिन दोनों के वायदा भाव तेजी के साथ खुले। सोने के भाव 97,650 रुपये, जबकि चांदी के भाव 1,13,250 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार सोने-चांदी के शुरुआती कारोबार में तेजी देखने को मिल रही है। सोने के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रेक्ट 82 रुपये की तेजी के साथ 97,627 रुपये के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 97,545 रुपये था। फिलहाल यह 98 रुपये की तेजी के साथ 97,643 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क सितंबर कॉन्ट्रेक्ट 215 रुपये की तेजी के साथ 1,13,268 रुपये पर खुला। पिछला बंद भाव 1,13,053 रुपये था। इस समय यह 198 रुपये की तेजी के साथ 1,13,251 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने-चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। कॉमेक्स पर सोना 3,313.40 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 3,310 डॉलर प्रति औंस था। इस समय यह 2.30 डॉलर की तेजी के साथ 3,312.30 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। सोने के वायदा भाव ने इस साल 3,509.90 डॉलर के भाव पर ऑल टाइम हाई छू लिया है। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 38.33 डॉलर के भाव पर खुले। पिछला बंद भाव 38.22 डॉलर था। इस समय यह 0.05 डॉलर की तेजी के साथ 38.27 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

रुपया शुरुआती कारोबार में 18 पैसे टूटकर 86.88 डॉलर पर खुला

मुंबई (एजेंसी)। रुपया मंगलवार को शुरुआती कारोबार में 18 पैसे टूटकर 86.88 प्रति डॉलर पर आ गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि आयातकों की ओर से डॉलर की मांग जारी रहने से रुपये के मुकाबले अमेरिकी मुद्रा में अच्छी बढ़त बनी रही, जिससे घरेलू मुद्रा में नकारात्मक रुख रहा। उन्होंने बताया कि इसके अलावा घरेलू शेयर बाजारों में सुस्त रुख और विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी ने निवेशकों की धारणा को और कमजोर किया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में रुपया, अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 86.76 पर खुला और फिर 86.88 प्रति डॉलर के निचले स्तर को छू गया जो पिछले बंद भाव से 18 पैसे की गिरावट दर्शाता है। रुपया सोमवार को डॉलर के मुकाबले 86.70 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.01 प्रतिशत की बढ़त के साथ 98.64 पर आ गया।

सुदर्शन तीसरे नंबर के लिए बेहतर बल्लेबाज - पोंटिंग

मैनचेस्टर (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने युवा भारतीय बल्लेबाज साई सुदर्शन की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह तीसरे नंबर पर काफी अच्छी बल्लेबाजी कर सकते हैं। इसलिए प्रबंधन उन्हें इसके लिए अवसर दे। मैनचेस्टर में भारत की दूसरी पारी की खराब शुरुआत के बाद एक तीसरे नंबर पर किये उतारा जाये ये सवाल एक बार फिर उठा है। सुदर्शन इस मैच में पहली पारी में तो रन बनाने में सफल रहे थे पर दूसरी पारी में असफल रहे। भारत ने तीसरे स्थान पर चेतेश्वर पुजारा को हटाये जाने के बाद से ही के शुभमन गिल से लेकर एल राहुल, करुण नायर को भी आजमाया पर कोई भी सफल नहीं रहा। पोंटिंग ने कहा कि तीसरे नंबर पर इतने सारे विकल्पों को खिलाने से किसी भी खिलाड़ी पर दबाव पैदा होता है। एक ऐसा दबाव जिसकी सुदर्शन जैसे एक युवा खिलाड़ी को जरूरत नहीं है। पोंटिंग ने कहा, आपको हर समय इस चिंता में डूबे रहने की जरूरत नहीं है कि आपको दूसरा मौका मिलेगा या नहीं। उन्होंने सुदर्शन को पहले टेस्ट के लिए शामिल किया फिर बाहर किया और मैनचेस्टर में फिर उसके पास ही आ गये। एक युवा खिलाड़ी के लिए, और आप जानते हैं, जब मैं तीसरे नंबर पर आया था तब मैं इतना युवा नहीं था, लेकिन आप बस अपने कप्तान और अपने कोचों से थोड़ा सा आश्वासन चाहते थे कि ठीक है, अब हम तुम्हें चुन रहे हैं, हम तुम्हें अच्छा अवसर देंगे और देखेंगे कि तुम कैसा प्रदर्शन करते हो। क्योंकि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि सुदर्शन काफी अच्छा प्रदर्शन करेंगे पर उन्हें उन पर अपना विश्वास दिखाना होगा। पोंटिंग ने भारतीय प्रबंधन से अपने खिलाड़ियों का समर्थन करने का आग्रह किया, जैसे इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स और कोच ब्रेंडन मैकुलम अपने खिलाड़ियों का समर्थन करते हैं, जिसमें सलामी बल्लेबाज जैक क्रॉली और ओली पोप प्रमुख उदाहरण हैं।

गांगुली एशिया कप में पाकिस्तान के साथ मैच खेले जाने के समर्थन में उतरे

कोलकाता (एजेंसी)। एक ओर जहां पहलगाम आतंकी हमले के बाद क्रिकेट प्रशंसक भारतीय टीम के पाकिस्तान के खिलाफ एशिया कप में मैच खेलने का विरोध कर रहे हैं। वहीं पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा है कि मैच होने पर उन्हें कोई परेशानी नहीं है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) की मेजबानी में होने वाले एशिया कप में भारत और पाकिस्तान का 14 सितंबर को आमने-सामने होंगे। गांगुली ने कहा कि खेल चलते रहना चाहिए। पहलगाम जैसी घटना नहीं होनी चाहिए थी पर खेल में बाधा नहीं आनी चाहिये। आतंकवाद को रोका जाना चाहिये। उन्होंने कहा है कि भारत सरकार आतंकवाद रोकने के लिए पूरी ताकत से प्रयास कर रही है। देश ने ने आतंकवाद के खिलाफ मजबूत रुख अपनाया है पर खेलों को रोकना ठीक नहीं हैं।'

वहीं गांगुली के इस बयान की आलोचना हो रही है। लोगों का कहना है कि जब पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से हमारे देश में लोगों की जान जा रही है तक उससे कैसे खेला जा सकता है। वहीं कई पूर्व खिलाड़ियों और लोगों ने सोशल मीडिया पर गांगुली से यह पूछ है कि क्रिकेट मैच को पाकिस्तान के साथ रिश्तों को सामान्य करने का जरिया किस कारण से माना जाना चाहिए जबकि उसकी ओर से लगातार आतंकी घटनाएं हो रही हैं ? वहीं गत दिवस ही पूर्व कप्तान मोहम्मद अजहरउद्दीन ने कहा था कि एशिया कप में पाक के साथ नहीं खेला जाना चाहिये। हाल में भारतीय रिटायर्ड क्रिकेटरों ने भी पाकिस्तान के साथ लंदन में जारी वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स क्रिकेट टूर्नामेंट का बहिष्कार कर दिया था।

भारतवंशी शैलेश जेजुरिकर प्रॉटर एंड गैंबल के नए सीईओ नियुक्त

1 जनवरी 2026 से संभालेंगे कार्यभार

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका की प्रमुख उपभोक्ता वस्त्र कंपनी प्रॉक्टर एंड गैंबल (पीएंडजी) ने भारतीय मूल के शैलेश जेजुरिकर को अपना अगला मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) नियुक्त किया है। वे 1 जनवरी 2026 से इस बहुराष्ट्रीय कंपनी का नेतृत्व संभालेंगे। शैलेश जेजुरिकर 1989 में पीएंडजी में सहायक ब्रांड प्रबंधक के रूप में शामिल हुए थे और तब से कंपनी के साथ जुड़े हैं। अब वे वर्तमान सीईओ जॉन मोलर की जगह लेंगे। पीएंडजी एक अग्रणी एफएमसीजी कंपनी है जो भारत में एरियल, टाइड, व्हिस्पर, ओले, जिलेट, अम्बिपुर, पैम्पर्स, पैंटीन, ओरल-बी, हेड एंड शोल्डर्स और विक्स जैसे प्रसिद्ध ब्रांड के लिए जानी जाती है। कंपनी के मुख्यालय सिनसिनाटी, ओहियो में स्थित हैं। शैलेश के नेतृत्व में पीएंडजी भविष्य में भी अपने उपभोक्ता केंद्रित उत्पादों के जरिए वैश्विक बाजार में अपनी पकड़ मजबूत बनाएगी। निदेशक मंडल ने अक्टूबर 2025 में होने वाली वार्षिक शेयरधारक बैठक में उन्हें निदेशक के रूप में चुने जाने के लिए भी नामित किया है। भारत के कई दूसरे नामी उद्योगपति और अधिकारी भी वैश्विक स्तर पर शीर्ष पदों पर काबिज हैं। मुरादाबाद के सबीह खान को हाल ही में एप्पल के मुख्य परिचालन अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया है। वहीं, सत्य नडेला माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ और चेयरमैन हैं, जबकि सुंदर पिचाई गूगल और अल्फाबेट के सीईओ हैं।

शुभमन सीख रहे हैं उनपर भरोसा बनाये रखें - कपिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव ने कहा है कि युवा बल्लेबाज शुभमन गिल का ये कप्तान के तौर पर पहला दौरा है, इसलिए ये स्वाभाविक है कि वह सीख रहे है और ऐसे में गलतियां करेंगे ही। इसलिए हमें उनपर भरोसा बनाये रखते हुए उनका समर्थन करते रहना होगा। कपिल ने आलोचकों से कहा कि कप्तानी के मामले में परिपक्व होने के लिए कुछ समय देने दिया जाना चाहिये। गिल को रोहित शर्मा और विराट कोहली के अचानक संन्यास लेने के कारण इंग्लैंड दौरे के ठीक पहले कप्तान बनाया गया था। बतौर कप्तान इस सीरीज में उन्होंने काफी अच्छी बल्लेबाजी की है। कपिल कहा, ''उसे समय दो। यह उसकी पहली सीरीज है, वह गलतियां करेगा और समय के साथ कई सकारात्मक बातें भी होंगी, वह सीखेगा। वह अगर सीख रहा है तो कोई समस्या नहीं है। वह अपनी गलतियों से सीख रहा है, यह बहुत महत्वपूर्ण है।'' उन्होंने कहा, ''यह एक युवा टीम है, इन्हें खेलने का मौका मिल रहा है और आने वाले दिनों में ये खिलाड़ी जीतेंगे। यह बस एक नई टीम है। दुनिया में किसी भी नई टीम को तालमेल बिठाने में समय लगता है। गिल एक नए कप्तान हैं, और वे बहुत कुछ सीखेंगे और मुझे लगता है कि यह सीरीज सीखने का एक कदम होगी।'' कपिल ने तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को लेकर कहा कि उसने चोट से बचने के लिए पांच मैचों की इस सीरीज के केवल तीन टेस्ट खेलने का विकल्प चुना था। जो उसके अनुसार सही है। साथ ही कहा, ''मुझे लगता है कि हर कोई अलग है। समय बदल गया है। सब का शरीर अलग है। वे अलग तरह से काम कर रहे हैं। सब को एक ही प्रकार के देखना सही नहीं होगा। वह हमारे पास मौजूद तेज गेंदबाजों में से एक है पर उसका एक्शन काफी अलग है और ऐसे में फिटनेस बनाए रखना मुश्किल होता है।'' उन्होंने कहा, ''हमने नहीं सोचा था कि उसका करियर इतना लंबा होगा क्योंकि वह शरीर पर बहुत अधिक जोर डालता है। इसके बावजूद भी वह भारतीय टीम के लिए शानदार प्रदर्शन कर रहा है। '' वहीं डेब्यू करने वाले युवा तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि किसी खिलाड़ी से पहले ही मैच में प्रदर्शन में चमत्कार की उम्मीद करना सही नहीं है।

19 साल की दिव्या बनीं शतरंज की वर्ल्ड चैपियन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय शतरंज के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया है। 19 वर्षीय दिव्या देशमुख ने फिडे वूमेन्स वर्वर्ल्ड कप 2025 का खिताब अपने नाम कर लिया है। उन्होंने दुनिया की शीर्ष महिला शतरंज खिलाड़ियों में शुमार कोनेरू हम्पी को हराकर यह उपलब्धि अपने नाम किया। फाइनल मुकाबले में दोनों भारतीय दिग्गजों के बीच जबरदस्त टक्कर देखने को मिली। दोनों क्लासिकल गेम्स ड्रॉ रहे, जिसके बाद फैसला रैपिड टाईब्रेकर में हुआ। दिव्या देशमुख ने हम्पी को 1.5-0.5 से हराकर न केवल खिताब जीता बल्कि एक नया इतिहास भी रच दिया। वह शतरंज विश्व कप जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गई हैं।

गावस्कर बोले टीम शुभमन की , इसलिए वे ही लें चयन पर अंतिम फैसला

लंदन (एजेंसी)। भारतीय टीम के पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि अंतिम ग्यारह के चयन का पूरा अधिकार कप्तान शुभमन गिल के पास होना चाहिये न कि कोच गौतम गंभीर के पास। गावस्कर ने कहा कि टीम कप्तान की होती है कोच की नहीं। इसलिए कप्तान की राय सबसे अहम होती है। विराट कोहली और रोहित शर्मा के संन्यास के बाद कई लोगों ने नई भारतीय टेस्ट टीम को गंभीर की टीम करार दिया, जबकि चयनकर्ताओं ने शुभमन को नया टेस्ट कप्तान नियुक्त किया था। इससे सवाल ये भी उठ रहा है कि ड्रेसिंग रूम में कप्तान की पकड़ है या कोच हावी हैं? टेस्ट के चौथे दिन जब, गावस्कर से सीधे तौर पर पूछा गया कि क्या यह भारतीय टीम शुभमन या गंभीर की है।

इसपर गावस्कर ने कहा कि उन्हें अपनी कप्तानी के दिनों में कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि उस समय कोई मुख्य कोच नहीं था। इसकी जगह पर उन्होंने प्रबंधकों या सहायक प्रबंधकों से सुझाव मांगे, जो अक्सर पूर्व खिलाड़ी होते थे। गावस्कर ने कहा, हमारे पास कोच नहीं थे। हमारे पास सिर्फ पूर्व खिलाड़ी ही मैनेजर या सहायक मैनेजर के तौर पर थे। वे ऐसे लोग थे जिनके पास जाकर आप बात कर सकते थे, लंच के समय, दिन के खेल के अंत में या मैच से पहले और वे केवल अपनी सलाह देते थे, फैसला हमें लेना होता था। इसलिए, मेरे लिए कप्तान और कोच के संयोजनप को समझना कठिन है। जब मैं कप्तान था, तब हमारे पास कोई भी पूर्व खिलाड़ी नहीं था। गावस्कर ने कहा कि टीम चयन में अंतिम फैसला कप्तान का ही होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि स्पिनर कुलदीप यादव को अभी तक शुभमन के चाहते के बाद भी अवसर नहीं मिला है। इसके अलावा शार्दुल ठाकुर को सीरीज के पहले मैच के बाद टीम से बाहर कर दिया गया था पर नीतीश रेड्डी की चोट के बाद फिर शामिल कर लिया गया। उन्होंने साथ ही कहा, वह कप्तान हैं। लोग उनके और उनकी कप्तानी के बारे में बात करेंगे। इसलिए उन्हें फैसले करने चाहिये।

साथ ही कहा कि आजकल सभी चयन कप्तान की इच्छा से नहीं होते केवल ऐसा दिखाया जाता है कि व सहमत है जिससे लगे कि सब ठीक है।

ऑस्ट्रेलिया में कठिन पिचों पर खेलने के लिए तैयार रहें इंग्लैंड के बल्लेबाज - स्मिथ

लंदन (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के स्टार बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने कहा है कि इंग्लैंड के बल्लेबाज आजकल घरेलू मैदान पर अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं पर उन्हें आगामी एशेज सीरीज के लिए तैयार रहना चाहिये क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में हालात बिलकुल अलग होंगे। स्मिथ का मानना है कि इंग्लैंड के बल्लेबाज अभी सपाट पिचों पर बड़े स्कोर बनाकर खुश हो रहे हैं पर ये उनके लिए अच्छा नहीं होगा। साथ ही कहा कि बल्लेबाजों को अनुकूल पिचों की आदत नहीं डालनी चाहिए क्योंकि इंग्लैंड के बल्लेबाजों को ऑस्ट्रेलिया में ऐसी पिचें नहीं मिलेंगी। स्मिथ ने कहा, पिछले तीन-चार साल के दौरान देखा गया है कि ऑस्ट्रेलिया के विकेट शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों के लिए विकेट काफी कठिन रहे हैं। यह उनके लिए एक अच्छी चुनौती होगी पर यह एक शानदार सीरीज होने वाली है। एशेज की तैयारी कर रहे स्मिथ इंग्लैंड-भारत सीरीज पर भी नजर रख रहे हैं। उन्होंने कहा, मैं भारत और इंग्लैंड की सीरीज देख रहा हूं और वहां शानदार क्रिकेट खेला गया है, इसलिए मुझे लगता है कि इस साल एशेज बेहद शानदार होने वाली है। स्मिथ को लगता है कि इंग्लैंड ने अपने आक्रामक रवैये पर अंकुश लगाते हुए दर्शकों का मनोरंजन करने की जगह पर अब मैच जीतने पर ज़्यादा ध्यान देना शुरु कर दिया है। इस क्रिकेटर ने कहा, पिछले कुछ सप्ताह में उन्होंने हालातों के हिसाब से खेलना शुरू कर दिया है जबकि पहले वे आक्रामक खेल से दर्शकों का मनोरंजन करते थे। वे अब मैच जीतने की कोशिश कर रहे हैं, जो शायद उनकी पिछली टिप्पणियों से अलग है। ऑस्ट्रेलियाई टी20 टीम इस समय वेस्टइंडीज के खिलाफ पांच मैचों की सीरीज खेल रही है पर स्मिथ, जो आगामी हंड्रेड टूर्नामेंट में वेल्श फायर की कप्तानी करेंगे अभी इंग्लैंड में ही हैं। हालांकि उन्होंने इस साल फरवरी में चैंपियंस ट्रॉफी के बाद एकदिवसीय से संन्यास ले लिया था पर स्मिथ 2028 लॉस एंजिल्स खेलों तक टी20 प्रारूप में खेलते रहेंगे जिससे कि ओलंपिक में भागीदारी कर सकें।स्मिथ ने कहा, मैंने एकदिवसीय क्रिकेट खेलना बंद करने का फैसला किया जिससे मैं और अधिक फ्रेंचाइजी के लिए खेल सकूं और ओलंपिक टीम में जगह बना सकूं।

पहले की अपेक्षा आज के दौर में बल्लेबाजी आसान हुई - पीटरसन

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन का कहना है कि आज के दौर में बड़े स्कोर बनाना पहले से काफी आसान हो गया है। इसलिए भी खिलाड़ी आसानी से नये रिकार्ड बना रहे हैं। पीटरसन के अनुसार ये सब इसलिए हो रहा है कयोंकि आज टेस्ट क्रिकेट खेलने वाली टीमों के पास पहले जैसे घातक गेंदबाज नहीं हैं। इससे मुकाबले बल्लेबाजों की ओर झुक गये हैं। पीटरसन के इस बयान से एक नई बहस शुरु हो सकती है। इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज जो रूट के टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में दूसरे स्थान पर पहुंचने के बाद पीटरसन का ये बयान आया है। अब तक दूसरे स्थान पर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग थे। इसी को लेकर पीटरसन ने सोशल मीडिया में कहा, 'मेरी बात पर नाराज न हों पर ये सही है कि आजकल बल्लेबाजी करना 20 से 25 साल पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान हो गया है। पहले के दौर में खौफनाक गेंदबाजों के कारण बल्लेबाजी करना आज की तुलना में दोगुना कठिन था। पीटरसन ने 2005 से 2013 के बीच इंग्लैंड के लिए 104 टेस्ट, 136 एकदिवसीय और 37 टी-20 मैच खेले। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 23 शतक और 35 अर्द्धशतकों के साथ 47.28 की औसत से 8,181 रन बनाए। पीटरसन ने अपने जमाने के कई गेंदबाजों के नाम लिए और पूछा है कि आज इनके स्तर का कोई भी गेंदबाज किसी भी टीम के पास है क्या ? साथ ही कहा कि अगर है तो वे केवल 10 गेंदबाजों के नाम बताएं जिनकी तुलना पहले के गेंदबाजों से की जा सकते। उन्होंने कहा, 'वकार यूनुस, शोएब अख्तर, वसीम अकरम, सकलेन मुश्ताक, अनिल कुंबले, जवागल श्रीनाथ, हरभजन सिंह , डोनाल्ड, शॉन पोलाक, मैक मैक्ग्रा, बैट ली, शेन वार्न, डेनियल विटोरी व कर्टली एंबोस जैसे गेंदबाजों को सामना करना बेहद कठिन होता था।

जडेजा को स्टोस से बेहतर ऑलराउंडर मानते हैं कपिल

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव का मानना है कि पिछले कुछ समय में इंग्लैंड के ऑलरांउडर बेन स्टोक्स ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है पर अगर भारत के रविन्द्र जडेजा से तुलना करें तो वह अभी भी पीछे हैं। कपिल ने कहा है कि जडेजा स्टोक्स से अधिक अच्छे ऑलराउंडर हैं। स्टोक्स ने भारत के खिलाफ मैनचेस्टर में 14वां टेस्ट शतक लगाया। इस दौरान उन्होंने अपने 7000 टेस्ट रन भी पूरे किए हैं। अब स्टोक्स के नाम 115 मैचों में 35.7 के औसत से 7032 रन हो गये हैं। उन्होंने इस दौरान 14 शतक और 35 अर्धशतक भी लगाये हैं। स्टोक्स ने भारत के खिलाफ चौथे मैच में 198 गेंद में ही 141 रन बनाए। वह सीरीज में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज भी हैं। वहीं स्टोक्स के बारे में पूछे जाने पर कपिल ने कहा, ''मैं तुलना नहीं करना चाहता। स्टोक्स एक अच्छे ऑलराउंडर हैं हालांकि मुझे अभी भी लगता है कि जडेजा उनसे आगे हैं। वह कहीं बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।'' स्टोक्स टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में 7000 रन और 200 विकेट हासिल करने वाले तीसरे ऑलराउंडर हैं। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के जैक कैलिस और वेस्टइंडीज के सर गैरी सोबर्स ने ये उपलब्धि

बिना रेरा परमीशन के भू माफियाओं के द्वारा करोड़ों की भूमि मे अवैध प्लाटिंग का खेल

सीएमओ ने नोटिस जारी कर शुरु की कार्यवाही

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मनगवॉ नगर परिषद क्षेत्र में लगातार बिना किसी परमिशन के अंधाधुंध नियम विरुद्ध तरीक़े से प्लानिंग कर अवैध कालोनी बसाए जाने का काम किया जा रहा है। जिसके बाद से यहाँ का नगर परिषद सख्त हो गया है नगर परिषद के द्वारा अवैध रूप से प्लाटिंग कर के कॉलोनी बसा रहे मालिकों को नोटिस देकर जारी करते हुए बनाए जा रहे अवैध कालोनी को रोके जाने के लिए कहा गया है। नगर परिषद के बोर्ड नंबर 14 में 82/2/1 एवं 83/1/41 व 83/41/31 के भू स्वामियों के द्वारा मनगवां नगर परिषद में सबसे बड़ी प्लानिंग कर कालोनी की बसाह कराई जा रही है वहीं इस मामले को नगर परिषद ने गंभीरता से लिया है मुख्य नगर पालिका अधिकारी हेमन्त त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया है की नियम विरुद्ध तरीक़े से बसाहट कराने वाले कलोनाइजर के प्रोप्रइटरो को नोटिस जारी कर दी गई है मनगवां के वार्ड क्रमांक 14 में सबसे बड़ी कालोनी बना कर प्लानिंग किए जाने की जानकारी मिलने के बाद निकाय से कर्मचारियों का दल भेज कर नोटिस चस्पा करा दी गई है साथ ही मौखिक तौर पर भी बताया गया है मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमन्त त्रिपाठी ने यह भी जानकारी दी है की 24 जुलाई को वीसी में भी नगरीय प्रशासन के पीएस के द्वारा निर्देशित किया गया है की जो लोगों द्वारा रेकी नियमों का बिना पालन स्वीकृति के प्लानिंग कालोनी बना कर बेची जा रही है उसपर नगरपालिका कार्यवाही करे।

प्लाटिगं भूमि की बिक्री 1 से 2 हज़ार के बीच लेकिन राजिस्ट्री सरकारी रेट 500 रु के आसपास की: जानकारी के अनुसार मनगवां में अवैध रूप से प्लॉटिंग करने वाले भू माफ़ियाओं के द्वारा रजिस्ट्री के ख़र्च में सरकार के टैक्स की भी चोरी की जा भूमि क्रेताओ के द्वारा 1 से 2 हज़ार रुपए प्रति स्क्वायर फ़िट के हिसाब से सौदा करते हैं लेकिन उन्हें रजिस्ट्री 500 रु के आस पास जो भी सरकारी रेट है उसके अनुसार रजिस्ट्री करा कर टैक्स चोरी का खेल किया जा रहा हैं। को नोटिस जरी करते हुए मौक़े में चस्पाँ कराया गया है। बताया जाता है की यहाँ पर लगभग 04 एकड़ ज़मीन पर अवैध रूप से प्लॉटिंग का कार्य किया जा रहा है।

उपाध्यक्ष ने कलेक्टर को लिखा पत्र: मनगवां नगर परिषद के उपाध्यक्ष प्रमोद उर्मलिया ने यहाँ पर अवैध रूप से भूमाफियाओं के द्वारा प्लॉटिंग का कारोबार किए जाने पर रोक लगाए जाने के लिए रीवा कलेक्टर प्रतिभा पाल एवं रेरा के प्रमुख सचिव मप्र भोपाल को पत्र लिखा है। जिसमें कहा है की यहाँ पर अवैध तरीक़े से भूमाफ़ियाओ के द्वारा प्लाटिंग का कारोबार किया जा रहा है साथ ही यहाँ रहने वाले लोगों की निजी ज़मीन भी प्रभावित की जा रही है प्लानिंग करने वाले लोगों के द्वारा शासकीय व ग़ैर शासकीय ज़मीनों को हथियाने का भी काम किया जा रहा है ऐसी स्थिति में जनहित को देखते हुए भूमाफ़ियाओ के खिलाफ सक्त कार्यवाही किया जाना आवश्यक है।

सार्वजनिक स्थलों पर खुलेआम शराबखोरी, आयुक्त ने दिए कार्रवाई के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर दिनदहाड़े शराब का सेवन किया जा रहा है। नया बस स्टैंड, सिरमौर चौराहा, पीटीएस और रेलवे ओवरब्रिज समेत बजरंग नगर के आसपास खुलेआम शराब का सेवन किया जा रहा है। इसका एक वीडियो भी सामने आया है। स्थानीय लोगों ने बताया कि विशेषकर नया बस स्टैंड क्षेत्र शराबियों का पसंदीदा अड्डा बन चुका है। शाम होते ही शराब दुकानों के आसपास के ठेले और गुमटियां मयखाने में तब्दील हो जाते हैं, जहां शराबी घंटों बैठे रहते हैं। इन स्थानों से दिनभर महिलाओं और बच्चों का आवागमन होता है।

अधिवक्ता वीके माला ने बताया कि असामाजिक तत्व बेलगाम हो चुके हैं और उनमें पुलिस-प्रशासन का कोई भय नहीं रहा। उन्होंने व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए कहा कि अब शहर के सार्वजनिक स्थलों को मयखाना घोषित कर देना चाहिए, क्योंकि महिलाओं और बच्चों का इन स्थानों से गुजरना मुश्किल हो गया है।

आयुक्त बोले- स्थान चिह्नित, शराबखोरी करने वालों पर जुर्माना लगाएंगे: नगर निगम आयुक्त सौरभ सोनवड़े ने बताया कि ऐसे स्थानों को चिह्नित किया गया है। शराबखोरी करने वालों पर जुर्माने का प्रावधान है। नगर निगम, पुलिस प्रशासन के सहयोग से कार्रवाई करेगा। गौरतलब है कि इंदौर की तर्ज पर रीवा को भी स्वच्छता में नंबर वन बनाने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन इस तरह की गतिविधियां शहर की साख को प्रभावित कर रही हैं।

कलेक्टर ने सुनी 69 आवेदकों की समस्यायें

सतना। कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ने मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई में जिले के दूर-दराज के क्षेत्रों से आये 69 आवेदकों से उनकी समस्यायें सुनी और अधिकारियों को तत्काल निराकरण के निर्देश दिये। इस मौके पर डिप्टी कलेक्टर बीके मिश्रा सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। जनसुनवाई में जमीन का सीमांकन कराने, अनुकंपा नियुक्ति, खाद्यान पात्रता पर्ची, दाखिल-खारिज कराने, प्रधानमंत्री आवास योजना, अवैध कब्जा हटाने, विद्युत समस्या, जमीन का कब्जा दिलाने, सीमांकन कराने, चिकित्सा सहायता, रोजगार दिलाने, भरण-पोषण और संबल योजना के लाभ संबंधी आवेदन लेकर जनसुनवाई में पहुंचे।

मैहर जिले की जनसुनवाई में आये 28 आवेदन: कलेक्टर मैहर रानी बाटड ने मंगलवार को जनसुनवाई में जिले के विभिन्न अंचलों से प्राप्त 28 आवेदनों पर सुनवाई करते हुए संबंधित अधिकारी को निराकरण करने के निर्देश दिए।

पति-पत्नी पर लाठी-डंडे से हमला, सवालो के घेरे में पुलिस की भूमिका

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बैकुंठपुर थाना क्षेत्र के पथरा में एक व्यक्ति और उनकी पत्नी पर गाँव के ही एक युवक रजनीश शुक्ला ने लाठी-डंडे से हमला कर दिया. इस हमले में संतोष शुक्ला के सिर, गर्दन, हाथ, पेट में चोट आई है एवं हाथ में 6 टांके लगे हैं, उसे इलाज के लिए सरकारी अस्पताल सिरमौर में भर्ती कराया गया।

सवालो के घेरे में बैकुंठपुर थाना पुलिस की भूमिका - युवक ने पहले ही थाना प्रभारी को अपनी जान को खतरे की जानकारी दी थी, लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। बैकुंठपुर थाना पुलिस की लापरवाही के कारण एक युवक की जान खतरे में पड़ गई। पीड़ित संतोष शुक्ला ने थाना प्रभारी विजय सिंह को पहले ही अपने ऊपर हमले की आशंका जताई थी, रजनीश शुक्ला ने संतोष शुक्ला पर छुरा और चाकू से हमला किया, लेकिन कुछ लोगों ने बीच-बचाव कर संतोष शुक्ला की जान बचाई। इस घटना के बाद पीड़ित परिवार पुलिस से सख्त कार्रवाई की मांग कर रहा है ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों 7 पीड़ित परिवार का कहना की सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाएं पुलिस ताकि हमारे परिवार जान को कोई खतरा न हो।

घटना को लेकर बैकुंठपुर थाना में प्राथमिकी दर्ज कर ली गयी है. पीड़ित संतोष शुक्ला पिता रामानुज शुक्ला निवासी पथरी का हमराह अपने चाचा रामनरेश शुक्ला व पत्नी सरला शुक्ला के साथ थाना उपस्थित आकर मौखिक रिपोर्ट लेख कराया कि आज दिनांक 28.07.25 के शाम करीबन 05.00 बजे मैं अपने खेत मे मजदूरो के साथ धान लगवा रहा था तब रजनीश शुक्ला, अजनीश शुक्ला, हेमलता शुक्ला मेरे खेत मे आकर जमीनी विवाद को लेकर मुझे मां बहन की गन्दी गन्दी गाली देने लगा तब मै गाली देने से मना किया तो रजनीश शुक्ला एव अजनीश शुक्ला मेरे साथ हाथ मुक्का एव लाठी डण्डे से मारपीट करने लगे और हेमलता हाथ मे लिए पत्थर से मेरे सिर के पीछे मार दी तब मै हल्ला गुहार किया तो मेरी पत्नी सरला आकर बीच बचाव करने लगी तो उसके साथ भी मारपीट करने लगे इतने में हल्ला गुहार सुनकर मेरे चाचा रामनरेश शुक्ला एव दिनेश कोरी आकर बीच बचाव किए तब वह लोग हम लोगो को छोडे एवं जाते जाते बोले की आज तो बच गए लेकिन दुबारा खेत मे आओगे तो जान से खत्म कर देगे। मारपीट से मेरे दाहिने हाथ की कलाई मे छिलनदार चोट, बाए हाथ की कलाई मे खरोचदार चोट, सिर मे पीछे सूजनदार चोट, दाहिने तरफ पेट मे, पीड़ित ने बैकुंठपुर थाना में लिखित शिकायत दी, जिस पर पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

दबंगों ने स्कूल में घुसकर प्राचार्य को पीटा, 10 बदमाशों पर एफआईआर, पहले स्कूली छात्र से हुआ था विवाद

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के बिछिया थाना क्षेत्र के लक्ष्मणपुर में संचालित राजहंस शिशु विद्यालय में सोमवार को छात्रों के पुराने विवाद को सुलझाना प्राचार्य को भारी पड़ गया। विवाद के चलते दर्जनों की संख्या में हथियारबंद युवक स्कूल पहुंचे और प्राचार्य रमेश मिश्रा पर हमला कर दिया। घायल अवस्था में उन्हें संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। बिछिया पुलिस ने इस मामले में 10 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

प्राचार्य रमेश मिश्रा के अनुसार, कुछ दिन पहले स्कूल के छात्र अमन शर्मा का कुछ अन्य लड़कों से विवाद हुआ था। उसी विवाद को लेकर मंगलवार को नितिन सेन, योगेश साकेत, देवेश साकेत और प्रशांत साकेत स्कूल पहुंचे और अमन शर्मा के बारे में पूछताछ करने लगे। प्राचार्य ने उन्हें समझाइश देकर स्कूल से बाहर जाने को कहा।

गाली-गलौज कर और लड़कों को बुलाया: समझाइश के बाद भी चारों युवक नहीं माने और गाली-गलौज करते हुए फोन कर अन्य लड़कों को बुला लिया। कुछ देर में विकास साकेत, राहुल साकेत, रियान कुमार पटेल और आकाश पीटीएस हाथों में डंडे लेकर स्कूल पहुंचे और प्राचार्य के साथ मारपीट शुरू कर दी। इस हमले में प्राचार्य के सिर और हाथ में गंभीर चोटें आईं।

बीच-बचाव में बेटे और शिक्षकों को भी चोटें आईं: घटना के समय मौजूद प्राचार्य का बेटा राज मिश्रा जब बीच-बचाव करने आया तो उसके साथ भी मारपीट की गई और उसकी पीठ में चोट आई। शिक्षक कृष्णा सेन और अर्पित नामदेव ने बीच-बचाव किया, तब जाकर हमलावर स्कूल से भागे।

यूपी में पत्नी तो एमपी में पति ने लगाई फांसी; पहचान पत्र से हुई पहचान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। पारिवारिक विवाद के बाद एक दंपती ने अलग-अलग जगहों पर आत्महत्या कर ली। पत्नी ने यूपी में फांसी लगाकर जान दी, जबकि पति ने एमपी में पेड़ से लटककर खुदकुशी की। जानकारी के अनुसार सोमवार सुबह लगभग 8 बजे सतीअनुसुइया मोड़ पर एक पेड़ में अज्ञात व्यक्ति की लाश फंदे पर झूलती मिली। पुलिस ने शव को नीचे उतारकर तलाशी ली। कपड़ों से मिले पहचान पत्र से मृतक की पहचान रामजनक पिता रामकृपाल यादव (52) के रूप में हुई। वो गोबरिया बुजुर्ग, थाना भरतकूप, जिला चित्रकूट (यूपी) का निवासी था।

पहले पत्नी फिर पति ने की आत्महत्या: जब पुलिस ने मृतक के परिजनों से संपर्क किया तो उन्हें पता चला कि रविवार दोपहर को विवाद के बाद रामजनक की पत्नी राजपती यादव (50) ने मवेशियों के बाड़े में जाकर फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली थी। जब रामजनक को पत्नी के आत्महत्या का पता चला तो वो बाइक लेकर कहीं निकल गया था और तब से उसकी कोई खबर नहीं थी।

दंपती की दो बेटियां हैं: माना जा रहा है कि पत्नी के आत्महत्या करने की खबर सुनकर रामजनक ने भी अपनी जान दे दी। दंपती की मौत से उनकी दो बेटियों के सिर से माता-पिता का साया उठ गया है।

स्कॉर्पियो से हो रही थी कोरेक्स की तस्करी, 1147 शीशियां के साथ 2 तस्कर गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, मऊगंज (निप्र)। पुलिस ने हाईवे क्रमांक-135 पर गाड़ा नदी के समीप एक बड़ी कार्रवाई में सायरन लगी स्कॉर्पियो से भारी मात्रा में नशीली कफ सिरप बरामद की है। पुलिस ने मौके से दो आरोपियों को गिरफ्तार किया और एक अपचारी बालक को हिरासत में लिया। पुलिस अधीक्षक दिलीप कुमार सोनी को मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक सफेद स्कॉर्पियो (एमपी04सीएस0054) में कोरेक्स की खेप बनारस से सीधी की ओर भेजी जा रही है। एएसपी विक्रम सिंह और एसडीओपी सची पाठक के निर्देशन में दो विशेष टीमों का गठन किया गया।

हनुमना यूपी बॉर्डर पर जब संदिग्ध स्कॉर्पियो पहुंची, पुलिस ने वाहन रोकने का प्रयास किया। चालक तेजी से वाहन भगाकर गाड़ा मोड़ की ओर भागा। पुलिस ने पीछा करते हुए गाड़ा ओवरब्रिज के पास ट्रकों की सहायता से रास्ता रोका। तेज रफ्तार स्कॉर्पियो एक ट्रक से टकरा गई और उसका बायां हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। वाहन से उतरे तीन युवकों को तत्काल हिरासत में लिया गया।

तलाशी में स्कॉर्पियो से कुल 1147 शीशी नशीली कफ सिरप (अनुमानित मूल्य 2,23,665), तीन मोबाइल फोन (अनुमानित मूल्य 25,000), और वाहन (कीमत 11 लाख) बरामद किए गए। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान रजनीश गिरी (23) और विष्णु केवट (24), निवासी ग्राम पटपरा, थाना कमर्जी, जिला सीधी के रूप में हुई। एक अपचारी बालक को पुलिस ने बाल संरक्षण अधिनियम के तहत निरुद्ध किया। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि यह खेप राजू कुशवाहा निवासी मर्शर थाना कमर्जी के निर्देश पर भेजी जा रही थी। स्कॉर्पियो वाहन रजनीश के नाम पर पंजीकृत है। वाहन में पुलिस जैसी सायरन व्यवस्था लगी थी, जिससे पुलिस को भ्रमित कर अवरोध टालने का प्रयास किया जा रहा था।

एक महीने पहले महिला ने लगाई फांसी, गंदी फोटो खींचकर दी थी धमकी; आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। एक विवाहित महिला को खुदकुशी के लिए मजबूर करने के आरोप में नागौद पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। टीआई अशोक पांडेय के अनुसार, 28 जून को एक महिला ने खेत पर बनी अहरी में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। परिजनों से पूछताछ और जांच में पता चला कि महिला के जान देने से दो दिन पहले जब वो कुएं पर पानी भरने गई थी, तब आरोपी धीरू पांडेय ने उसकी फोटो खींच ली थी। आरोपी महिला को बदनाम करने की धमकी देकर वहां से भाग गया था।

कोर्ट ने आरोपी को भेजा जेल: इस घटना से आहत महिला दो दिनों तक काफी परेशान रही और जान दे दी। प्रारंभिक साक्ष्य मिलने पर पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 108 के तहत मामला दर्ज किया। 28 जुलाई की सुबह आरोपी धीरू पांडेय (32) को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया है। आरोपी मझगवां का निवासी है।

पेंशन प्रकरण लंबित रहने पर आहरण संवितरण अधिकारियों का वेतन रोका जाएगा : बीएस जामोद

कमिश्नर ने संभागीय टीएल बैठक में एक पेड़ माँ के नाम तथा सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने संभागीय टीएल बैठक में सीएम हेल्पलाइन, एक पेड़ माँ के नाम, ई आफिस, लंबित विधानसभा के प्रश्नों, संभागीय समीक्षा बैठक के लंबित एटीआर बिन्दुओं की विस्तार से समीक्षा की। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में श्री जामोद ने निर्देश दिए कि पेंशन प्रकरण लंबित रहने वाले संबंधित विभागीय आहरण संवितरण अधिकारियों का वेतन रोका जाए तथा दो-दो वेतनवृद्धि रोकने का भी नोटिस जारी किया जाए। उन्होंने कहा कि विभिन्न विभागों के सेवानिवृत्त अधिकारियों, कर्मचारियों के बड़ी संख्या में पेंशन प्रकरण लंबित हैं। संबंधित अधिकारियों का दायित्व है कि संवेदनशीलता के साथ पेंशन प्रकरणों का सेवानिवृत्त होने के साथ ही निराकरण करा दिया जाए। जिन विभागों के पेंशन प्रकरण प्रस्तुत नहीं किए गए या लंबित हैं उनके संभागीय अधिकारियों का वेतन तभी आहरित होगा जब पेंशन प्रकरण पूर्णत: निराकृत हो जाएंगे।

सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने कहा कि विभागीय अधिकारी माइक्रो प्लानिंग कर एक-एक आवेदन पत्र पर ठोस निराकरण करें। प्राप्त शिकायतों को मैदानी अमले से सेक्टरवार समाधानपूर्वक निराकरण कराएं। उन्होंने निर्देश दिए कि सीएम हेल्पलाइन के पूर्व के लंबित प्रकरणों का अभियान चलाकर निराकरण करें। उन्होंने ई आफिस में फाइलों के प्रचलन में वृद्धि के निर्देश दिए तथा कहा कि प्रति सप्ताह हर विभाग कम से कम 25 फाइलें ई माध्यम से प्रेषित की जाय। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को योजनाओं में नवाचार करने तथा उनका लाभ आमजन तक पहुंचाने के निर्देश दिए। कमिश्नर ने कहा कि मानीटरिंग सिस्टम को सशक्त कर हितग्राहियों को नवीन तकनीक का लाभ दिलाएं। उन्होंने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत विभिन्न विभागों द्वारा किए गए वृक्षारोपण की जानाकारी ली तथा इसे सूचीबद्ध कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

संभागीय समीक्षा बैठक में कमिश्नर ने अधिकारियों से अपेक्षा की कि सप्ताह में एक दिन मंगलवार को सभी अधिकारी कार्यालय साइकिल से या पैदल आएं जिससे वाहनों में ईंधन के व्यय को कम किया जा सकेगा।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।